

**SHRI JAGANNATH SANSKRIT VISHVAVIDYALAYA,  
SHRI VIHAR, PURI-3**

**ACHARYA SYLLABUS –  
IVth SEMESTER**

**Sahitya**  
**FOURTH SEMESTER**  
**Core Foundation**

**CF 5.4.16**

**षोडशपत्रम्**

| प्रश्नपत्रम्   | कोड            | विषयः   | पूर्णाङ्कः | अङ्क-विभाजनम् | कालांशः | क्रेडिट् |
|----------------|----------------|---|------------|---------------|---------|----------|
| 16.<br>Sahitya | C.F.<br>5.4.16 | धर्मशास्त्रं शाङ्करवेदान्तश्च   | 100        | 80+20         | 60      | 05       |
|                |                | <b>Unit – I –</b><br>(क) धर्मस्तोतांसि<br>(ख) आधुनिकयुगे धर्मशास्त्रस्योपयोगिता   | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|                |                | <b>Unit – II –</b><br>(क) आचारविमर्शः<br>(ख) व्यवहारविमर्शः                       | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|                |                | <b>Unit – III –</b><br>(क) प्रायश्चित्तविमर्शः<br>(ख) श्राद्धविमर्शः              | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|                |                | <b>Unit – IV –</b><br>शाङ्करदर्शनम् ( मूलतः ब्रह्मणः सिद्ध्यर्थमागमप्रणीतं यावत्) | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|                |                | <b>Unit – V –</b><br>शाङ्करदर्शनम् ( अध्यासनिरूपणात् अध्यायसमाप्तिं यावत्)        | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |

**सहायकग्रन्थाः-**

१. धर्मशास्त्रस्येतिहासः (प्रथमभागः), लेखकः प्रो. जयकृष्णमिश्रः, चौखम्बा संस्कृत सीरीज अफिस, वाराणसी
२. History of Dharmashastra ( Ancient and Medieval Religious and civil Law), by Dr.P.V.Kane, Vol. III, B.O.R.I, Poona
३. The Dharmashastra : An Introductory Analysis , by Brajakishore Swain, Akshaya Prakashan, Delhi -110052
४. माधवाचार्यप्रणीतः सर्वदर्शनसंग्रह , प्रकाशकः -चौखम्बा विद्याभवनम्, वाराणसी
५. मनुष्वृति वा मनुषांहिता(ओडिआ अनुवाद गबेषणाम् क टिप्पणी ३ अनुक्रमणिका घम्बिति) उच्चर ब्रजकिशोर द्वारा, एद् ग्रन्थ निकेतन, आनन्दबज्जार, श्री १ जगन्नाथ मन्दिर, पूरा।
६. संस्काराणां पर्यालोचनम् - लेखकः प्रो. जयकृष्णमिश्रः, पुरी, ओडिशा
७. मनुस्मृतिः, (श्रीकुल्लूकभट्टप्रणीतमन्वर्थमुक्तावलीटीकासहिता) , चौखम्बा संस्कृत संस्थानम्, वाराणसी - २२१००१

\*\*\*\*\*

**Sahitya**  
**FOURTH SEMESTER**  
**Core Course**

**CC 5.4.17**

**सप्तदशपत्रम्**

| अष्टमपत्रम्<br>प्रश्नपत्रम्   | कोड            | विषयः  | पूर्णाङ्कः | अङ्क-<br>विभाजनम् | कालां<br>शः | क्रेडिट् |
|---|----------------|--|------------|-------------------|-------------|----------|
| 17.<br>Sahitya  | C.C.<br>5.4.17 | धन्यालोकः (तृतीयचतुर्थोद्योतौ)   | 100        | 80+20             | 60          | 05       |
|   |                | <b>Unit – I –</b><br>धन्यालोकतृतीयोद्योतस्यादितः<br>रसबन्धोक्तमौचित्यमित्यादिकारिकां यावत् ।   | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|   |                | <b>Unit – II –</b><br>तृतीयोद्योतस्य “विभावानुभाव”<br>इत्यादिकारिकातः “विवक्षिते रसे<br>लब्धप्रतिष्ठे तु विरोधिनाम्” इत्यादिकारिकां<br>यावत् । | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|   |                | <b>Unit – III –</b><br>तृतीयोद्योतस्य प्रसिद्धोऽपि<br>प्रबन्धनामित्यादिकारिकातो<br>व्यञ्जनानिरूपणान्तः ।                                       | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|   |                | <b>Unit – IV –</b><br>तृतीयोद्योतस्य<br>विमतिविषयाणामित्यादिकारिकातः अन्तं<br>यावत् ।  | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|   |                | <b>Unit – V –</b><br>चतुर्थोद्योतः (सम्पूर्णः)   | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
| <b>सहायकग्रन्थाः-</b>   |                |  |            |                   |             |          |
| १. धन्यालोकः (सटीकः ), लेखक - आनन्दवर्धनः, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी । |                |  |            |                   |             |          |

\*\*\*\*\*

**Sahitya**  
**FOURTH SEMESTER**  
**Core Course**

**CC 5.4.18**

**अष्टादशपत्रम्**

| प्रश्नपत्रम्   | कोड            | विषयः   | पूर्णाङ्कः | अङ्क-<br>विभाजनम् | कालां<br>शः | क्रेडिट् |
|----------------|----------------|---|------------|-------------------|-------------|----------|
| 18.<br>Sahitya | C.C.<br>5.4.18 | व्यक्तिविवेकः (प्रथमो विमर्शः)  | 100        | 80+20             | 60          | 05       |
|                |                | <b>Unit – I –</b><br>प्रथमविमर्शारभ्यतः शब्दार्थयोः<br>उपसर्जनीकृतस्वार्थत्वखण्डनं यावत्।<br>( न चास्य स्वार्थाभिधानमात्रपर्यवसित-<br>सामर्थ्यस्य... अर्थस्यैव तदुपपत्तिसमर्थनात्<br>इति यावत्।   | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                |                | <b>Unit – II –</b><br>व्यञ्जनाखण्डनतः आरभ्य (सर्व एव हि<br>शब्दो व्यवहारः साध्यः इत्यतः)<br>अनुमेयार्थविषयकसाध्यसाधनभावान्तं यावत्<br>(प्रयच्छतोच्चैः कुसुमानि मानिनी इति<br>श्लोकान्तं यावत्)  | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                |                | <b>Unit – III –</b><br>रसादिरूपार्थे व्यङ्ग्य-व्यञ्जकभावस्य<br>औपचारिकप्रयोगतः आरभ्य (यथा च<br>वाक्यार्थविषये साध्यसाधनभावे<br>साध्यसाधनप्रतीत्योः इत्यतः)<br>प्रतीयमानार्थस्य काव्यात्मत्वस्वीकारं यावत्।<br>(केवलमात्रैवार्थस्योभयात्मनः सामान्येन ...<br>तेन यः काव्यस्य व्यवस्थित इति तत्रोचितः<br>पाठः) इति यावत्। | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                |                | <b>Unit – IV –</b><br>ध्वनिलक्षणे स्थितस्य ‘वा’ इति पदस्य<br>खण्डनात् आरभ्य (किञ्चात्र वा शब्दो<br>विकल्पार्थो वा स्यात्... इत्यतः) अनुमानेन<br>लक्ष्यार्थबोध इति यावत् (किञ्चोपचारवृत्तौ<br>शब्दस्य मा भूदतिप्रसङ्गः तस्या:<br>वाचकाश्रयत्वमसिद्धमेव इति यावत्)  | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |

|  |  |    |        |    |    |
|--|--|----|--------|----|----|
|  | <b>Unit – V –</b><br>भक्तिध्वन्योः एकरूपतातः आरम्भ (यः<br>सतत्त्वसमारोपस्तत्सम्बन्धनिबन्धन...<br>इत्यतः) प्रथमविमर्शान्तं यावत्। | 16 | 10+3+3 | 12 | 01 |
|--|--|----|--------|----|----|

**सहायकग्रन्था:-**

१. व्यक्तिविवेकः प्रथमो विमर्शः (सटीकः ) - महिमभद्रः, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी ।

\*\*\*\*\*

**CC 5.4.19**

**Sahitya**  
**FOURTH SEMESTER**

**ऊनविंशपत्रम्**

| प्रश्नपत्रम्   | कोड            | विषयः  | पूर्णाङ्कः | अङ्क-विभाजनम् | कालांशः | क्रेडिट् |
|----------------|----------------|--|------------|---------------|---------|----------|
| 19.<br>Sahitya | C.C.<br>5.4.19 | चम्पूरामायणं गीतगोविन्दञ्च   | 100        | 80+20         | 60      | 05       |
|                |                | <b>Unit – I –</b><br>चम्पूरामायणस्य आरण्यकाण्डस्य आरम्भतः<br>ऊनविंशतितमश्लोकं यावत्।           | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|                |                | <b>Unit – II –</b><br>चम्पूरामायणस्य आरण्यकाण्डस्य<br>ऊनविंशतितमश्लोकपरतः काण्डान्तं<br>यावत्। | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|                |                | <b>Unit – III –</b><br>गीतगोविन्दस्य प्रथमसर्गः  | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|                |                | <b>Unit – IV –</b><br>गीतगोविन्दस्य द्वितीयसर्गः   | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|                |                | <b>Unit – V –</b><br>गीतगोविन्दस्य तृतीयसर्गः  | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |

**सहायकग्रन्थाः**

1. चम्पूरामायणम् – भोजराजविरचितम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।
2. चम्पूरामायण का साहित्यिक परिशीलन – लेखक करुणा श्रीवास्तव।
3. गीतगोविन्दम् (सटीकम्) – जयदेवविरचितम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

\*\*\*\*\*

**Sahitya**  
**FOURTH SEMESTER**

**CE 5.4.20**

**विंशपत्रम्**

| प्रश्नपत्रम्  | कोड            | विषयः   | पूर्णाङ्कः | अङ्क-<br>विभाजनम् | कालां<br>शः | क्रेडिट् |
|---|----------------|---|------------|-------------------|-------------|----------|
| 20.<br>Sahitya  | C.E.<br>5.4.20 | शैवदर्शनम् ( प्रत्यभिज्ञाहृदयम् ),<br>समकालीनदर्शनम् (विवेकानन्ददर्शनम्,<br>अरविन्ददर्शनम्) | 100        | 80+20             | 60          | 05       |
|   |                | <b>Unit – I –</b><br>प्रत्यभिज्ञाहृदयस्य १ सूत्रतः ७ सूत्रं यावत्।                          | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|   |                | <b>Unit – II –</b><br>प्रत्यभिज्ञाहृदयस्य ८ सूत्रतः १७ सूत्रं<br>यावत्।                     | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|   |                | <b>Unit – III –</b><br>प्रत्यभिज्ञाहृदयस्य १८ सूत्रतः २० सूत्रं<br>यावत्।                   | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|   |                | <b>Unit – IV –</b><br>विवेकानन्ददर्शनम्<br>(क) धर्मः कः ? (ख) आत्मा, ईश्वरस्य।              | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|   |                | <b>Unit – V –</b><br>अरविन्ददर्शनम्<br>(क) पुनर्जन्म परलोकश्च (ख) कर्म अत्मा<br>अमृतं च।    | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
| <b>सहायकग्रन्थाः-</b>   |                |   |            |                   |             |          |
| १. प्रत्यभिज्ञाहृदयम्- हिन्दुनुवादव्याख्यासहितम्, लेखक- जयदेव सिंह, मोतिलाल बनारसीदास, वाराणसी,<br>१९८३ |                |   |            |                   |             |          |
| २. The Life Devine, Book-2, Part-2 by Sri Aurobindo, Published by Sri Aurobindo Ashram, Pondichery.     |                |   |            |                   |             |          |

\*\*\*\*\*

**VYAKARANA**  
**FOURTH SEMESTER**  
**Core Foundation**

**CF 5.4.4**

**ષોડશપત્રમ्**

| પ્રશ્નપત્રમ्   | કોડ           | વિષય:   | પૂર્ણાઙ્કા: | અઙ્ક-વિભાજનમ् | કાલાં શા: | ક્રેડિટ |
|--|---------------|---|-------------|---------------|-----------|---------|
| 16.<br>Vyakarana   | C.F.<br>5.4.5 | ધર્મશાસ્ત્ર શાઙ્કરવેદાન્તશ્લી   | 100         | 80+20         | 60        | 05      |
|  |               | <b>Unit – I –</b><br>(ક) ધર્મસ્તોતરાંસિ<br>(ખ) આધુનિકયુગે ધર્મશાસ્ત્રસ્થોપયોગિતા  | 16          | 10+3+3        | 12        | 01      |
|  |               | <b>Unit – II –</b><br>(ક) આચારવિમર્શા:<br>(ખ) વ્યવહારવિમર્શા:                     | 16          | 10+3+3        | 12        | 01      |
|  |               | <b>Unit – III –</b><br>(ક) પ્રાયશ્ચિત્તવિમર્શા:<br>(ખ) શ્રાદ્ધવિમર્શા:            | 16          | 10+3+3        | 12        | 01      |
|  |               | <b>Unit – IV –</b><br>શાઙ્કરદર્શનમ्<br>મૂલત: બ્રહ્મણ: સિદ્ધ્યર્થભાગમપ્રણીતં યાવત् | 16          | 10+3+3        | 12        | 01      |
|  |               | <b>Unit – V –</b><br>अધ્યાસનિરૂપણાત् અધ્યાયસમાપ્તિં યાવત्                         | 16          | 10+3+3        | 12        | 01      |
| <b>સહાયકગ્રન્થ:-</b>   |               |   |             |               |           |         |
| ૧. ધર્મશાસ્ત્રસ્યેતિહાસ: (પ્રથમભાગ:), પ્રો. જયકૃષ્ણમિશ્રા:, ચૌખમ્બાસંસ્કૃતસીરીજઅફિસ, વારાણસી ।                 |               |   |             |               |           |         |
| ૨. મનુસ્મૃતિ / બા મનુષ્યાંહિતા, ઓછેથી અનુબાદ, ડ. ગુજરાતિશેરદ્ધાજીં, આનન્દ બજાર, શ્રીજગન્નાથ મિન્ડિર,<br>પુરા । |               |   |             |               |           |         |
| ૩. સર્વદર્શનસંગ્રહ:, માધવાચાર્યા:, ચૌખમ્બાવિદ્યાભવન, વારાણસી ।   |               |   |             |               |           |         |

\*\*\*\*\*

**VYAKARANA**  
**FOURTH SEMESTER**

**CC 5.4.10**

**सप्तदशपत्रम्**

| प्रश्नपत्रम्     | कोड            | विषयः  | पूर्णाङ्कः | अङ्क-<br>विभाजनम् | कालां<br>शः | क्रेडिट् |
|------------------|----------------|--|------------|-------------------|-------------|----------|
| 17.<br>Vyakarana | C.C.<br>5.4.10 | पतञ्जलिप्रणीतम्  | 100        | 80+20             | 60          | 05       |
|                  |                | <b>Unit – I –</b><br>महाभाष्यस्य षष्ठाहिकम्<br>१. सर्वादीनि सर्वनामानि<br>२. विभाषा दिक्समासे बहुब्रीही<br>३. न बहुब्रीही<br>४. तृतीया समासे<br>५. विभाषा जसि<br>६. पूर्वापरावरदक्षिणोत्तरापराधराणि<br>व्यवस्थायामसंज्ञायाम्<br>७. स्वमज्जातिधनाख्यायाम्<br>८. अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                  |                | <b>Unit – II –</b><br>महाभाष्यस्य षष्ठाहिकम्<br>१. स्वरादिनिपातमव्ययम्<br>२. तद्वितीशासर्वविभक्तिः<br>३. कृन्मेजन्तः<br>४. अव्ययीभावश्च<br>५. शि सर्वनामस्थानम्<br>६. सुडनपुंसकस्य<br>७. नवेति विभाषा  | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                  |                | <b>Unit – III –</b><br>महाभाष्यस्य सप्तमाहिकम्<br>१. इग्यणः सम्प्रसारणम्<br>२. आद्यन्तौ टकितै<br>३. मिंदचोऽन्त्यान्तपरः<br>४. एच इघ्रस्वादेशे<br>५. षष्ठी स्थानेयोगा   | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |

|   |   |    |        |    |    |
|---|---|----|--------|----|----|
|   | <p><b>Unit – IV –</b><br/> <b>महाभाष्यस्य सप्तमाहिकम्</b><br/>         १. स्थानेऽन्तरतमः<br/>         २. उरण्‌रपरः<br/>         ३. अलोऽन्त्यस्य<br/>         ४. डिच्च<br/>         ५. आदे: परस्य<br/>         ६. अनेकालशित्सर्वस्य</p>  | 16 | 10+3+3 | 12 | 01 |
|   | <p><b>Unit – V –</b><br/> <b>महाभाष्यस्य नवमाहिकम्</b><br/>         १. अदर्शनं लोपः<br/>         २. प्रत्ययस्य लुकश्लुलुपः<br/>         ३. प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम्<br/>         ४. अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा<br/>         ५. तपरस्तत्कालस्य<br/>         ६. आदिरन्त्येन सहेता</p> | 16 | 10+3+3 | 12 | 01 |
| <p><b>सहायकग्रन्थाः</b><br/>         व्याकरणमहाभाष्यम्, श्रीमत्पतञ्जलिविरचितम्, प्रदीपोऽद्योतभावबोधिनीसहितम्, सम्पादक – जयशंकरलालत्रिपाठी,<br/>         कृष्णदास अकादमी, वाराणसी- १९९८।<br/>         अन्यतसर्वं पूर्ववत्।</p> |   |    |        |    |    |

**VYAKARANA**  
**FOURTH SEMESTER**

**CC 5.4.11**

**अष्टादशपत्रम्**

| प्रश्नपत्रम्                    | कोड            | विषयः   | पूर्णाङ्कः | अङ्क-विभाजनम् | कालांशः | क्रेडिट् |
|---------------------------------|----------------|---|------------|---------------|---------|----------|
| 18.<br>Vyakarana                | C.C.<br>5.4.11 | परिभाषेन्दुशेखरः – नागेशभट्टकृतः<br>( ५९ परिभाषातः १३४ परिभाषां यावत्)                                      | 100        | 80+20         | 60      | 05       |
|                                 |                | <b>Unit – I –</b><br>बाधबीजकथनप्रकरणम्<br>एकोनषष्ठितमपरिभाषातः<br>एकसप्ततितमपरिभाषापर्यन्तम्                | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|                                 |                | <b>Unit – II –</b><br>शेषार्थकथनप्रकरणम्<br>द्विसप्ततितमपरिभाषातः<br>नवतितमपरिभाषापर्यन्तम्                 | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|                                 |                | <b>Unit – III –</b><br>शेषार्थकथनप्रकरणम्<br>एकनवतितमपरिभाषातः<br>दशाधिकैकशततमपरिभाषापर्यन्तम्              | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|                                 |                | <b>Unit – IV –</b><br>शेषार्थकथनप्रकरणम्<br>एकादशाधिकैकशततमपरिभाषातः<br>चतुस्त्रिंशदधिकैकशततमपरिभाषां यावत् | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|                                 |                | <b>Unit – V –</b><br>परिभाषाकाराणां परिचयः  | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
| <b>सहायकग्रन्थाः पूर्ववत् ।</b> |                |   |            |               |         |          |

**VYAKARANA**  
**FOURTH SEMESTER**

**C.C. 5.4.12**

**नवदशपत्रम्**

| प्रश्नपत्रम्   | कोड            | विषयः   | पूर्णाङ्कः | अङ्क-<br>विभाजनम् | कालां<br>शः | क्रेडिट् |
|--|----------------|---|------------|-------------------|-------------|----------|
| 19.<br>Vyakarana   | C.C.<br>5.4.12 | वैयाकरणलघुमञ्चूषा – नागेशभट्टकृता   | 100        | 80+20             | 60          | 05       |
|  |                | <b>Unit – I –</b><br>शक्तिप्रकरणम् मूलतः<br>तादात्म्यस्वरूपनिरूपणं यावत्  | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|  |                | <b>Unit – II –</b><br>शक्तिपिरूपणम्<br>अपभ्रंशेऽपि शक्तिः इत्यतः शक्तितात्पर्य-<br>निर्णयकनिरूपणं यावत्         | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|  |                | <b>Unit – III –</b><br>(क) लक्षणाप्रकरणम्<br>(ख) व्यञ्जनाप्रकरणम्   | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|  |                | <b>Unit – IV –</b><br>स्फोटप्रकरणम्   | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|  |                | <b>Unit – V –</b><br>(क) आकाड़क्षानिरूपणम्<br>(ख) योग्यतानिरूपणम्<br>(ग) आसत्तिनिरूपणम्<br>(घ) तात्पर्यनिरूपणम् | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
| <b>सहायकग्रन्थाः</b>   |                |   |            |                   |             |          |
| १. व्याकरणलघुमञ्चूषा – नागेशभट्ट, चौखम्बासुरभारतीप्रकाशन, वाराणसी ।                  |                |   |            |                   |             |          |
| २. व्याकरणलघुमञ्चूषा – नागेशभट्ट, सम्पूर्णनन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयप्रकाशन, वाराणसी । |                |   |            |                   |             |          |

**VYAKARANA**  
**FOURTH SEMESTER**

**O.E. 5.4.2**

**विंशपत्रम्**

| प्रश्नपत्रम्     | कोड           | विषयः   | पूर्णाङ्कः | अङ्क-<br>विभाजनम् | कालां<br>शः | क्रेडिट् |
|------------------|---------------|---|------------|-------------------|-------------|----------|
| 20.<br>Vyakarana | O.E.<br>5.4.2 | श्रीमद्गदाधरभट्टाचार्य विरचितः<br>व्युत्पत्तिवादः<br>प्रथमाकारके अभेदान्वयमात्रम् | 100        | 80+20             | 60          | 05       |
|                  |               | <b>Unit – I –</b><br>नीलो घट इत्यत्र अभेदान्वयबोधप्रक्रिया                        | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                  |               | <b>Unit – II –</b><br>कोऽभेद इति विचारः   | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                  |               | <b>Unit – III –</b><br>“स्तों पचति” इत्यादौ अन्वयप्रकारः                          | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                  |               | <b>Unit – IV –</b><br>घटो घट इत्यत्राभेदान्वयः संभवति न वेति<br>विचारः            | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                  |               | <b>Unit – V –</b><br>अभेदान्वयसिद्धान्तः  | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |

**सहायकग्रन्थाः**

१. व्युत्पत्तिवादः, श्रीमद्गदाधरभट्टाचार्यप्रणीतः आदर्श व्याख्यासहितः, वाणीविलासप्रकाशन, वाराणसी
२. व्युत्पत्तिवादः, तत्त्वबोधिनीभाषाभाष्यालंकृतः (हरिनारायणतिवारी), चौखम्बाविद्याभवन, वाराणसी, २००५।
३. व्युत्पत्तिवादः – गुढार्थतत्वालोकसहितः, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, २००१।
४. व्युत्पत्तिवादः – सुनन्दाहिन्दीटीकाविभूषितः (डा.सच्चिदानन्दमिश्रः) भारतीयविद्याप्रकाशन, वाराणसी, २००१।
५. व्युत्पत्तिवाद का समीक्षात्मकध्ययन (प्रथमाकारक) डॉ. गोपालमिश्रः, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर-२००२।
६. व्युत्पत्तिवादः – कृष्णभट्टी – भूढार्थतत्वालोक - आदर्श - जया – दीपिका- प्रकाश – शास्त्रार्थकलाव्याख्याभिः समलंकृतः (प्रथमभागः), सम्पादकः, अच्युदानन्ददाशः, न्यू भारतीय बुक् कारपोरेषन्, दिल्ली, २००४।
७. व्युत्पत्तिवादः – श्रीमद्गदाधरभट्टाचार्यप्रणीतः, डॉ.वैद्यनाथझाप्रणीतेन्दुकलाहिन्दीव्याख्यासहितः, हंसा प्रकाशन, जयपुर, २००१।

# Jyotirvijnan

## FOURTH SEMESTER

**CF 5.4.4**

### घोडशपत्रम्

| प्रश्नपत्रम्  | कोड           | विषयः   | पूर्णाङ्कः | अङ्क-विभाजनम् | कालांशः | क्रेडिट् |
|---|---------------|---|------------|---------------|---------|----------|
| 16.<br>Jyotirvijnan   | C.F.<br>5.4.4 | धर्मशास्त्रं शाङ्करवेदान्तश्च   | 100        | 80+20         | 60      | 05       |
|   |               | <b>Unit – I –</b><br>(क) धर्मस्नोतांसि<br>(ख) आधुनिकयुगे धर्मशास्त्रस्योपयोगिता   | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|   |               | <b>Unit – II –</b><br>(क) आचारविमर्शः<br>(ख) व्यवहारविमर्शः                       | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|   |               | <b>Unit – III –</b><br>(क) प्रायश्चित्तविमर्शः<br>(ख) श्राद्धविमर्शः              | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|   |               | <b>Unit – IV –</b><br>शाङ्करदर्शनम् ( मूलतः ब्रह्मणः सिद्ध्यर्थमागमप्रणीतं यावत्) | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|   |               | <b>Unit – V –</b><br>शाङ्करदर्शनम् ( अध्यासनिरूपणात् अध्यायसमाप्तिं यावत्)        | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
| <b>सहायकग्रन्थाः-</b>   |               |   |            |               |         |          |
| १. धर्मशास्त्रस्येतिहासः (प्रथमभागः), लेखकः प्रो. जयकृष्णमिश्रः, चौखम्बा संस्कृत सीरीज अफिस, वाराणसी  |               |   |            |               |         |          |
| २. History of Dharmashastra ( Ancient and Medieval Religious and civil Law), by Dr.P.V.Kane, Vol. III, B.O.R.I, Poona   |               |   |            |               |         |          |
| ३. The Dharmashastra : An Introductory Analysis , by Brajakishore Swain, Akshaya Prakashan, Delhi -110052   |               |   |            |               |         |          |
| ४. माधवाचार्यप्रणीतः सर्वदर्शनसंग्रह , प्रकाशकः -चौखम्बा विद्याभवनम्, वाराणसी   |               |   |            |               |         |          |
| ५. मनुस्मृति वा मनुषांहेता(उद्धिष्ठा अनुबाद गवेषणाम् क टिप्पणी ३ अनुक्रमणिका एम्बुन्टि) उच्चर ब्रजकिशोर व्यालँ, एद् ग्रन्थं निकेतन, आनन्दबज्जार, श्री जगन्नाथ मन्दिर, पूरा। |               |   |            |               |         |          |
| ६. संस्काराणां पर्यालोचनम् - लेखकः प्रो. जयकृष्णमिश्रः, पुरी, ओडिशा   |               |   |            |               |         |          |
| ७. मनुस्मृतिः, (श्रीकुल्लूकभट्टप्रणीतमन्वर्थमुक्तावलीटीकासहिता) , चौखम्बा संस्कृत संस्थानम्, वाराणसी - २२१००१   |               |   |            |               |         |          |

\*\*\*\*\*

**Jyotirvijnan**  
**FOURTH SEMESTER**

**C.C. 5.4.10**

**सप्तदशपत्रम्**

| प्रश्नपत्रम्        | कोड            | विषयः  | पूर्णाङ्कः | अङ्क-<br>विभाजनम् | कालां<br>शः | क्रेडिट् |
|---------------------|----------------|--|------------|-------------------|-------------|----------|
| 17.<br>Jyotirvijnan | C.C.<br>5.4.10 | अष्टकवर्गविचारः  | 100        | 80+20             | 60          | 05       |
|                     |                | <b>Unit – I –</b><br><b>ग्रहाणाम् अष्टकवर्गचक्रनिर्माणम्</b>   | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                     |                | <b>Unit – II –</b><br>(क) बिन्दुरेखयोर्मध्ये शुभाशुभत्वग्रहणम्<br>(ख) विभिन्नभावराशिसम्बन्धिविन्दोः<br>रेखायाः वा तुलनात्मकमध्ययनम्।<br>(ग) भावभावेशानुरोधेन विन्दोः रेखायाः वा<br>फलम्।     | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                     |                | <b>Unit – III –</b><br>(क) राहुलग्नयोरष्टकवर्गचक्रनिर्माणम्<br>एतयोरष्टकवर्गफलविचारे उपयोगः<br>(ख) त्रिकोणशोधनप्रकारः<br>(ग) एकाधिपत्यशोधनम्   | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                     |                | <b>Unit – IV –</b><br>(क) अष्टकवर्गस्य विस्तृताध्ययनम्<br>(ख) पिण्डानयनम्<br>(ग) अष्टकवर्गायुः साधनम्<br>(जातकपारिजातपाराशरमतेन)<br>(घ) इदम् अष्टकवर्गजमायुः कस्य<br>जातकस्य कृते ग्रहणीयम्। | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                     |                | <b>Unit – V –</b><br>(क) अष्टकवर्गफलाध्यायः<br>(ख) महाष्टक-समुदायाष्टकवर्गप्रकारः<br>(ग) अष्टकवर्गे विवादस्पदस्य विषयाः  | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                     |                |  |            |                   |             |          |

**सहायकग्रन्थः**

१. बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् ।
२. जातकपारिजातम् ।
३. Dates of destios – Applications of Astakaberga Vinaya Aditya.
४. Astakabarga System of Preditinus – Dr. B.V. Raman.
५. Digital Astrology – Richard House.
६. अष्टकवर्गमहानिबन्धः – डा. सुरेशचन्द्रमिश्रः

**Jyotirvijnan**  
**FOURTH SEMESTER**

**C.C. 5.4.11**

**अष्टादशपत्रम्**

| प्रश्नपत्रम्              | कोड            | विषयः   | पूर्णाङ्कः | अङ्क-<br>विभाजनम् | कालां<br>शः | क्रेडिट् |
|---------------------------|----------------|---|------------|-------------------|-------------|----------|
| 18.<br>Jyotirvijnan       | C.C.<br>5.4.11 | (क) नरपतिजयचर्यास्वरोदयः<br>(ख) भावकुतूहलम्   | 100        | 80+20             | 60          | 05       |
|                           |                | <b>Unit – I –</b><br>मात्रास्वरः, वर्णस्वरः, ग्रहस्वरः, जीवस्वरः,<br>राशिश्वरः, नक्षत्रस्वरः, पिण्डस्वरः,<br>योगस्वरः, स्वराणाम् अवस्था, तेषां फलानि<br>च । | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                           |                | <b>Unit – II –</b><br>हंसचारः   | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                           |                | <b>Unit – III –</b><br>सर्वतोभद्रचक्रप्रकरणम्   | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                           |                | <b>Unit – IV –</b><br>(क) पित्राद्यरिष्टविचारः ।<br>(ग) पुत्रभावविचारः ।<br>(ग) ग्रहाणां शयनादिद्वादशावस्थाविचारः ।   | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                           |                | <b>Unit – V –</b><br>(क) सप्तमस्थप्रत्येकग्रहफलम् ।<br>(ख) वैधव्ययोगाः ।<br>(ग) मारकविचारः ।<br>(घ) ग्रहाणां गर्वितादिभावाध्यायः ।                          | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
| <b>सहायकग्रन्थाः</b>      |                |   |            |                   |             |          |
| १. नरपतिजयचर्यास्वरोदयः । |                |   |            |                   |             |          |
| २. भावकुतूहलम् ।          |                |   |            |                   |             |          |

**Jyotirvijnan**  
**FOURTH SEMESTER**

**C.C. 5.4.12.**

**एकोनविंशपत्रम्**

| प्रश्नपत्रम्        | कोड            | विषयः   | पूर्णाङ्कः | अङ्क-विभाजनम् | कालांशः | क्रेडिट् |
|---------------------|----------------|---|------------|---------------|---------|----------|
| 19.<br>Jyotirvijnan | C.C.<br>5.4.12 | प्रयोगिकज्योतिषम् (मौखिकम्)   | 100        | 80+20         | 60      | 05       |
|                     |                | <b>Unit – I –</b><br>शंकुयन्त्रम्, तुरीययन्त्रम्, भित्तियमन्त्रम्,<br>सम्प्राटयन्त्रम्, नवीनदुरदर्शनञ्च<br>(Use of observatory Computer System) | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|                     |                | <b>Unit – II –</b><br>Horoscope Preparation Solution of Astrological Problem, Computation time local standards international.                   | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|                     |                | <b>Unit – III –</b><br>Computer application in Jyotirvijnan   | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|                     |                | <b>Unit – IV –</b><br>Palm reading  | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|                     |                | <b>Unit – V –</b><br>Astronomical Calculating   | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |

# Jyotirvijnan

## FOURTH SEMESTER

**C.C. 5.4.12.**

### विंशतिपत्रम्

| प्रश्नपत्रम् | कोड   | विषयः   | पूर्णाङ्कः | अङ्क-विभाजनम् | कालांशः | क्रेडिट् |
|--------------|---|---|------------|---------------|---------|----------|
| 20.          | CC<br>5.4.12  | यज्ञतत्त्वप्रकाशः   | 100        | 80 + 20       | 60      | 05       |
| Jyotirvijnan |   | Unit I-<br>अग्न्याधानतः आरभ्य<br>दर्शपूर्णमासयागान्तं यावत् | 16         | 10 + 3 + 3    | 12      | 01       |
|              |   | Unit II-<br>पिण्डपितृयज्ञतः आरभ्य<br>आग्रयणेष्टि यावत्      | 16         | 10 + 3 + 3    | 12      | 01       |
|              |   | Unit III-<br>सोमयागनिरूपणम्                                 | 16         | 10 + 3 + 3    | 12      | 01       |
|              |   | Unit IV-<br>चयनतः आरभ्य<br>राजसूययागान्तं यावत्             | 16         | 10 + 3 + 3    | 12      | 01       |
|              | Unit V-<br>अश्वमेधयागतः आरभ्य<br>महाव्रतनिरूपणं यावत् | 16  | 10 + 3 + 3 | 12            | 01      |          |

### सहायकग्रन्थाः

1. यज्ञतत्त्वप्रकाशः महामहोपाध्यायश्रीचिन्नास्वामिशास्त्रिपादैः विरचितः, सम्पादकः पी. एन. पट्टाभिरामशास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली 110007 ।
2. अश्वमेधविवेकः, डा. दिवाकरमहापात्रः, नाग पब्लिशर्स, 11A, U.A., Jawahar Nagar, Delhi 110007.
3. यज्ञतत्त्वविमर्शः, डा. मितालीदेव, सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालयः, वाराणसी ।
4. ब्राह्मण ग्रन्थों में दर्शपूर्णमासयाग (ब्राह्मणग्रन्थेषु दर्शपूर्णमासयागः), डा. उमेश प्रसाद दाश, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के अनुदान सहायता से प्रकाशित ।
5. यज्ञपात्रपरिचयः, मुख्यसम्पादकः - प्रो. हरेकृष्णशतपथी, सम्पादकः - आचार्यः श्रीपादसत्यनारायणमूर्तिः, राष्ट्रीयसंस्कृतविद्यापीठम्, तिरुपतिः 517507 ।
6. वैदिक यज्ञ संस्था और वेद विज्ञान, संपादक - प्रो. ओम् प्रकाश पाण्डेय, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, प्राधिकरण भवन, भरतपुरी, उज्जैन 456010 ।
7. *The Pravargya* (An Ancient Indian Iconic Ritual described and annotated), J. A. B. Buitenan, Deccan College, Postgraduate and Research Institute, Poona.

**NYAYA**  
**FOURTH SEMESTER**  
**Core Foundation**

**CF 5.4.4**

**षोडशपत्रम्**

| प्रश्नपत्रम्   | कोड           | विषयः  | पूर्णाङ्कः | अङ्क-<br>विभाजनम् | कालां<br>शः | क्रेडिट् |
|--|---------------|--|------------|-------------------|-------------|----------|
| 16. Nyaya  | C.F.<br>5.4.4 | धर्मशास्त्रं शाङ्करवेदान्तश्च  | 100        | 80+20             | 60          | 05       |
|  |               | <b>Unit – I –</b><br>(क) धर्मस्तोतांसि<br>(ख) आधुनिकयुगे धर्मशास्त्रस्योपयोगिता      | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|  |               | <b>Unit – II –</b><br>(क) आचारविमर्शः<br>(ख) व्यवहारविमर्शः                          | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|  |               | <b>Unit – III –</b><br>(क) प्रायश्चित्तविमर्शः<br>(ख) श्राद्धविमर्शः                 | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|  |               | <b>Unit – IV –</b><br>शाङ्करदर्शनम् ( मूलतः ब्रह्मणः<br>सिद्ध्यर्थमागमप्रणीतं यावत्) | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|  |               | <b>Unit – V –</b><br>शाङ्करदर्शनम् ( अध्यासनिरूपणात्<br>अध्यायसमाप्तिं यावत्)        | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
| <b>सहायकग्रन्थाः-</b>  |               |  |            |                   |             |          |
| १. धर्मशास्त्रस्येतिहासः (प्रथमभागः), लेखकः प्रो. जयकृष्णमिश्रः, चौखम्बा संस्कृत सीरीज अफिस,<br>वाराणसी  |               |  |            |                   |             |          |
| २. History of Dharmashastra ( Ancient and Medieval Religious and civil Law), by<br>Dr.P.V.Kane, Vol. III, B.O.R.I, Poona   |               |  |            |                   |             |          |
| ३. The Dharmashastra : An Introductory Analysis , by Brajakishore Swain, Akshaya<br>Prakashan, Delhi -110052   |               |  |            |                   |             |          |
| ४. माधवाचार्यप्रणीतः सर्वदर्शनसंग्रह , प्रकाशकः -चौखम्बा विद्याभवनम्, वाराणसी  |               |  |            |                   |             |          |
| ५. मनुस्मृतिः वा मनुसंहिता(ओडिआ अनुवाद गबेषणाम् क टिप्पणी ३ अनुक्रमणिका घट्टित) उच्चर<br>ब्रजकिशोर द्वारा, एव ग्रन्थ निकेतन, आनन्दबज्जार, श्री १ जगन्नाथ मन्दिर, पूरा। |               |  |            |                   |             |          |
| ६. संस्काराणां पर्यालोचनम् - लेखकः प्रो. जयकृष्णमिश्रः, पुरी, ओडिशा  |               |  |            |                   |             |          |
| ७. मनुस्मृतिः, (श्रीकुल्लूकभट्टप्रणीतमन्वर्थमुक्तावलीटीकासहिता) , चौखम्बा संस्कृत संस्थानम्,<br>वाराणसी - २२१००१   |               |  |            |                   |             |          |

\*\*\*\*\*

**NYAYA**  
**FOURTH SEMESTER**  
**सप्तदशपत्रम्**

**Core Course 5.3.10**

| प्रश्नपत्रम्  | कोड            | विषयः  | पूर्णाङ्कः | अङ्क-विभाजनम् | कालांशः | क्रेडिट् |
|---|----------------|--|------------|---------------|---------|----------|
| 17. Nyaya   | C.C.<br>5.3.10 | मुक्तिवादविचारः<br>रचयिता- श्रीहरिरामतर्कवागीशः                      | 100        | 80+20         | 60      | 05       |
|   |                | <b>Unit – I –</b><br>को नामापवर्ग इति विचारः।                        | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|   |                | <b>Unit – II –</b><br>आत्यान्तिकदुःखनिवृत्तेरपवर्गसाधनत्वम्।         | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|   |                | <b>Unit – III</b><br>आत्यान्तिकदुःखध्वंसो न मोक्ष इति<br>मतोपन्यासः। | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|   |                | <b>Unit – IV –</b><br>काशीमरणादीनां न साक्षात् मोक्षकारणता।          | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|   |                | <b>Unit – V –</b><br>जीवात्मनः परमात्मनि लयः इति विचारः।             | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
| <b>सहायकग्रन्थाः</b>  |                |  |            |               |         |          |
| १) Muktibada Vicharah of Sri Harirama Tarkavagisa Editor: Jagadish Chandra Bhattacharya.<br>प्राप्तिस्थानम्। Sanskrit College 2 Bankim Chattarjee Road, Kolkata-12. |                |  |            |               |         |          |
| २) मुक्तिवादविचारः- २००० (Introduction & Text) Dr. Kamalesh Mishra, S.J.S.V., Puri-3.   |                |  |            |               |         |          |

**NYAYA**  
**FOURTH SEMESTER**  
**अष्टादशपत्रम्**

**Core Course 5.4.11**

| प्रश्नपत्रम्   | कोड             | विषयः   | पूर्णाङ्कः | अङ्क-विभाजनम् | कालांशः | क्रेडिट् |
|--|-----------------|---|------------|---------------|---------|----------|
| 18. Nyaya  | C.C.<br>5.4.11. | शब्दार्थनिरूपणम्  | 100        | 80+20         | 60      | 05       |
|  |                 | <b>Unit – I –</b><br>पदार्थोद्देशप्रकरणम् (न्यायभाष्यम्<br>(न्या.भा. १ / १ ))   | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|  |                 | <b>Unit – II –</b><br>शब्दशक्तिपरीक्षाप्रकरणम् (न्यायभाष्यम्)<br>(न्या.भा. १ / २ )  | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|  |                 | <b>Unit – III</b><br>शब्दार्थसम्बन्धनिरूपणम् (न्यायमञ्जरी,<br>आ.४)  | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|  |                 | <b>Unit – IV –</b><br>(क) गवादिशब्दार्थविचारः<br>(न्यायमञ्जरी, आ.५)<br>(ख) वाच्यार्थवैविध्यम्                               | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|  |                 | <b>Unit – V –</b><br>(क) सार्थकशब्दनिरूपणम्<br>(ख) नामनिरूपणम्<br>(ग) नामविभागः, (शब्दशक्तिप्रकाशिका-<br>कारिका- ६, १३, १६) | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
| <b>सहायकग्रन्थाः -</b>   |                 |   |            |               |         |          |
| Logic of Knowledge Base By. Prof. K.C.Dash Sri Satguru Publications (Indian Books Centre) 40/5<br>Shakti Nagar, New Delhi-110007, India. |                 |   |            |               |         |          |

**NYAYA**  
**FOURTH SEMESTER**  
**उनविंशपत्रम्**

**Core Course 5.4.12**

| प्रश्नपत्रम्   | कोड            | विषयः  | पूर्णाङ्कः | अङ्क-विभाजनम् | कालांशः | क्रेडिट् |
|--|----------------|--|------------|---------------|---------|----------|
| 19. Nyaya  | C.C.<br>5.4.12 | प्रथमाकारके अभेदान्वयमात्रम् मूलतः<br>कृतं-पल्लवितेन इति यावत्           | 100        | 80+20         | 60      | 05       |
|  |                | <b>Unit – I –</b><br>नीलो घट इत्यत्र अभेदान्वय –बोधप्रक्रिया             | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|  |                | <b>Unit – II –</b><br>कोऽभेद इति विचारः                                  | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|  |                | <b>Unit – III</b><br>स्तोकं पचति इत्यादौ अन्वयप्रकारः                    | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|  |                | <b>Unit – IV –</b><br>घटो घट इत्यत्राभेदान्वयः सम्भवति न वा<br>इति विचार | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|  |                | <b>Unit – V –</b><br>अभेदान्वयसिद्धान्तः                                 | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
| <b>सहायम्पुस्तकानि :-</b>  |                |  |            |               |         |          |
| 1) व्युत्पत्तिवादः, संपादकः-कीर्त्यनन्द झा, चौखम्बाविद्याभरती, वारणसी।                                     |                |  |            |               |         |          |
| 2) व्युत्पत्तिवादः, संपादकः- शिवदत्तमिश्रः।  |                |  |            |               |         |          |
| 3) Vyutpattivada, (English Translation with notes) By Prof. V.P.Bhatt, Eastern, Book linkers,<br>New Delhi |                |  |            |               |         |          |

**NYAYA**  
**FOURTH SEMESTER**  
**विंशतिपत्रम्**

**Optional Elective 5.4.2**

| प्रश्नपत्रम्  | कोड            | विषयः  | पूर्णाङ्कः | अङ्क-विभाजनम् | कालांशः | क्रेडिट् |
|---|----------------|--|------------|---------------|---------|----------|
| 20. Nyaya   | O.E.<br>5.4.2. | वैयाकरणलघुमञ्चुषा -<br>श्रीनागेशभट्टप्रणीतः  | 100        | 80+20         | 60      | 05       |
|   |                | <b>Unit – I –</b><br>लघुमञ्चुषा-शक्तिप्रकरणम्<br>मूलतः तादात्म्यस्वरूपनिरूपणं यावत्।   | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|   |                | <b>Unit – II –</b><br>लघुमञ्चुषा-शक्तिप्रकरणम्<br>अपध्रंशोऽपि शक्तिः इत्यतः<br>शक्तितात्पर्यनिर्णयिकनिरूपणं यावत्।             | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|   |                | <b>Unit – III</b><br>लघुमञ्चुषा-<br>(क) लक्षणाप्रकरणम्<br>(ख) व्यञ्जनाप्रकरणम्   | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|   |                | <b>Unit – IV –</b><br>लघुमञ्चुषा-स्फोटप्रकरणम्   | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|   |                | <b>Unit – V –</b><br>लघुमञ्चुषा-<br>(क) आकाङ्क्षानिरूपणम्<br>(ख) योग्यतानिरूपणम्<br>(ग) आसत्तिनिरूपणम्<br>(घ) तात्पर्यनिरूपणम् | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
| <b>सहायकग्रन्थाः</b>  |                |  |            |               |         |          |
| १. वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्चुषा-नागेशभट्टविरचिता, कला-कुञ्जिका-सरलाव्याख्या विभूषिता,<br>सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वाराणसी। |                |  |            |               |         |          |
| २. रत्नप्रभाटीकासम्बलिता, चौखम्बासंस्कृतसीरीज् अफिस, वाराणसी।   |                |  |            |               |         |          |

# SARVADARSHAN

## FOURTH SEMESTER

**C.F. 5.4.4.**

### घोडशपत्रम्

| प्रश्नपत्रम्  | कोड           | विषयः  | पूर्णाङ्कः | अङ्क-<br>विभाजनम् | कालां<br>शः | क्रेडिट् |
|---|---------------|--|------------|-------------------|-------------|----------|
| 16.<br>Sarvadars<br>han   | C.F.<br>5.4.4 | धर्मशास्त्रं शाङ्करवेदान्तश्च  | 100        | 80+20             | 60          | 05       |
|   |               | <b>Unit – I –</b><br>(क) धर्मस्रोतांसि<br>(ख) आधुनिकयुगे धर्मशास्त्रस्योपयोगिता      | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|   |               | <b>Unit – II –</b><br>(क) आचारविमर्शः<br>(ख) व्यवहारविमर्शः                          | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|   |               | <b>Unit – III –</b><br>(क) प्रायश्चित्तविमर्शः<br>(ख) श्राद्धविमर्शः                 | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|   |               | <b>Unit – IV –</b><br>शाङ्करदर्शनम् ( मूलतः ब्रह्मणः<br>सिद्ध्यर्थमागमप्रणीतं यावत्) | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|   |               | <b>Unit – V –</b><br>शाङ्करदर्शनम् ( अध्यासनिरूपणात्<br>अध्यायसमाप्तिं यावत्)        | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
| <b>सहायकग्रन्थाः-</b>   |               |  |            |                   |             |          |
| १ . धर्मशास्त्रस्येतिहासः (प्रथमभागः), लेखकः प्रो. जयकृष्णमिश्रः, चौखम्बा संस्कृत सीरीज अफिस,<br>वाराणसी  |               |  |            |                   |             |          |
| २. History of Dharmashastra ( Ancient and Medieval Religious and civil Law), by<br>Dr.P.V.Kane, Vol. III, B.O.R.I, Poona  |               |  |            |                   |             |          |
| ३. The Dharmashastra : An Introductory Analysis , by Brajakishore Swain, Akshaya<br>Prakashan, Delhi -110052  |               |  |            |                   |             |          |
| ४. माधवाचार्यप्रणीतः सर्वदर्शनसंग्रह , प्रकाशकः -चौखम्बा विद्याभवनम्, वाराणसी   |               |  |            |                   |             |          |
| ५. मनुस्मृति वा मनुसंहिता(ओडिआ अनुबाद गवेषणाम् क टिप्पणी ३ अनुक्रमणिका एम्बिटि) उक्तर<br>ब्रजकिशोर द्वारा, एद् ग्रन्थ निकेतन, आनन्दबजार, श्री १ जगन्नाथ मन्दिर, पुरा। |               |  |            |                   |             |          |
| ६. संस्काराणां पर्यालोचनम् - लेखकः प्रो. जयकृष्णमिश्रः, पुरी, ओडिशा   |               |  |            |                   |             |          |
| ७. मनुस्मृतिः, (श्रीकुल्लूकभट्टप्रणीतमन्वर्थमुक्तावलीटीकासहिता) , चौखम्बा संस्कृत संस्थानम्,<br>वाराणसी - २२१००१  |               |  |            |                   |             |          |

\*\*\*\*\*

**SARVADARSHAN**  
**FOURTH SEMESTER**  
**सप्तदशपत्रम्**

**Core Course 5.4.10.**

| प्रश्नपत्रम्            | कोड            | विषयः   | पूर्णाङ्कः | अङ्क-विभाजनम् | कालांशः | क्रेडिट् |
|-------------------------|----------------|---|------------|---------------|---------|----------|
| 17.<br>Sarvadars<br>han | C.C.<br>5.4.10 | आधुनिकपाश्चात्यदर्शनम्  | 100        | 80+20         | 60      | 05       |
|                         |                | <b>Unit – I</b><br>(क) पाश्चात्यदर्शनस्योत्पत्तिविकाशौ,<br>कालदृष्ट्या विषयदृष्ट्या च पाश्चात्यदर्शनस्य<br>श्रेणीविभागः ।<br>(ख) वेकान् – परिचयः, (देशः, कालः,<br>कृतिश्च), अन्धसंस्कारमीमांसा,<br>आरोहानुमानपद्धतिः ।<br>(ग) देकार्त- परिचयः- (देशः, कालः,<br>कृतिश्च), सार्वभौमिकसंशयवादः, आत्मनः<br>निश्चितता, सहजातप्रत्ययवादः, ईश्वरमीमांसा,<br>मनःशरीरयोः सम्पर्कविचारः । | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|                         |                | <b>Unit – II</b><br>(क) स्पिनोजा – पतरिचयः – (देशः,<br>कालः, कृतिश्च), द्रव्यत्रयमीमांसा, मनः<br>शरीरयोः सम्पर्कविचारः, ज्ञानमीमांसा ।<br>(ख) लाइविनित्स- परिचयः – (देशः,<br>कालः कृतिश्च), मोनाइवादः,<br>पूर्वप्रतिष्ठितसमतालवादः ।  | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|                         |                | <b>Unit – III</b><br>(क) लक् – परिचयः (देशः, कालः,<br>कृतिश्च), सहजातप्रत्ययवादस्य खण्डनम्,<br>भाषाविश्लेषणम्, ज्ञानस्य स्वरूपम्, तस्य<br>सीमानिर्दरणञ्च ।<br>(ख) वर्कले: – परिचयः (देशः, कालः,<br>कृतिश्च), अमूर्तप्रत्ययवादसमीक्षणम्,<br>भाषाविश्लेषणम्, जडद्रव्यखण्डनम् ।<br>(ग) ह्यम् – परिचयः - (देशः, कालः,   | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |

|  |  |  |    |        |    |    |
|--|--|--|----|--------|----|----|
|  |  | कृतिश्च) अस्तिशब्दार्थनिर्वचनम्,<br>द्रव्यत्रयसमीक्षणम् संज्ञयवादः ।   |    |        |    |    |
|  |  | <b>Unit – IV –</b><br>विशुद्धज्ञानपरीक्षावादः – मानुएल्काण्ट-<br>परिचयः (देशः, कालः, कृतिश्च),<br>विशुद्धज्ञानपरीक्षावादस्य मूलतः<br>प्राग्नुभविकसम्प्रत्ययपर्यन्तम् । | 16 | 10+3+3 | 12 | 01 |
|  |  | <b>Unit – V –</b><br>विशुद्धज्ञानपरीक्षावादः –<br>अतीन्द्रियभ्रमज्ञानमारभ्य ग्रन्थसमाप्तिं<br>यावत् ।  | 16 | 10+3+3 | 12 | 01 |

**सहायकग्रन्थाः –**

१. पाश्चात्यदर्शनर इतिहास (आधुनिकयुग), (ओडिआ), ले- प्रो. हृदानन्दराय, श्रीगणेश्वरदास, ओडिशाराज्य पाठ्यपुस्तकप्रणयन ओ प्रकाशन संस्था, भुवनेश्वर ।
२. पाश्चात्यदर्शन का आधुनिक युग – ले. डा. ब्रजगोपालतिवारी ।
३. पाश्चात्य आधुनिकदर्शन कि समीक्षात्मक व्याख्या – ले. या. णसीह, मोतिलालबनारसी दास ।
४. आधुनिकपाश्चात्यदर्शन – ले. गोलाव राव ।
५. पाश्चात्यदर्शन – ले. प्रो. चन्द्रधर शर्मा ।
६. नीतिशास्त्रीय सिद्धान्त के पांच प्रकार – ले. सी. डी. बोड् ।
७. Critique of Pure reason – BY J.M.D. Mukhelejohn.
८. The fundamental question of philosophy – by A.C. Weing.
९. History of Modern European philosophy – by R.K. Pati
१०. Main problem of Kant's critiques – A critical survey – by B. Biswas
११. सिद्धान्तज्ञानपरीक्षावादः प्रो. नीलकण्ठपति:

**SARVADARSHAN**  
**FOURTH SEMESTER**  
**अष्टादशापत्रम्**

**Core Course 5.4.11.**

| प्रश्नपत्रम्   | कोड            | विषयः  | पूर्णाङ्कः | अङ्क-विभाजनम् | कालांशः | क्रेडिट् |
|--|----------------|--|------------|---------------|---------|----------|
| 18.<br>Sarvadars<br>han  | C.C.<br>5.4.11 | मूलग्रन्थः — मीमांसाश्लोकवार्तिकम्<br>(प्रथमद्वितीयसूत्रमात्रम्) | 100        | 80+20         | 60      | 05       |
|  |                | <b>Unit – I</b><br>प्रथमसूत्रस्य १ - ६५ वार्तिकं यावत्           | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|  |                | <b>Unit – II</b><br>प्रथमसूत्रस्य ६६ - ९२८ वार्तिकं यावत्        | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|  |                | <b>Unit – III</b><br>द्वितीयसूत्रस्य १ - १०० वार्तिकं यावत्      | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|  |                | <b>Unit – IV –</b><br>द्वितीयसूत्रस्य १०१ - २०० वार्तिकं यावत्   | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|  |                | <b>Unit – V –</b><br>द्वितीयसूत्रस्य २०१ - २८७ वार्तिकं यावत्    | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
| सहायकग्रन्थः —   |                |  |            |               |         |          |
| १ . श्लोकवार्तिकम्, आचार्यश्रीपार्थसारथीमिश्रकृतन्यायरत्नाकरव्याख्यासहितम्, पं.-<br>श्रीद्वारिकादासशास्त्रीसम्पादितम्, ताराप्रकाशनम्, वाराणसी — १९७८ । |                |  |            |               |         |          |
| २ . आचार्यश्रीकुमारिलभट्टप्रणीतमीमांसाश्लोकवार्तिकम् — वाराणसी — २००२ ।  |                |  |            |               |         |          |
| ३ . Sloka vartika of Kumarilla Bhatta, Translated in English by G.N. Jha, New Delhi.   |                |  |            |               |         |          |
| ४ . Mimansa Sloka Vartika, Translated in Hindi by Durgadhar Jha, Darbhanga, 1979   |                |  |            |               |         |          |

**SARVADARSHAN**  
**FOURTH SEMESTER**  
**उनविंशपत्रम्**

**Core Course 5.4.12**

| प्रश्नपत्रम्  | कोड्           | विषयः  | पूर्णाङ्कः | अङ्क-<br>विभाजनम् | कालां<br>शः | क्रेडिट् |
|---|----------------|--|------------|-------------------|-------------|----------|
| 19.<br>Sarvadars<br>han   | C.C.<br>5.4.12 | मूलग्रन्थः —<br>(क) शैवदर्शनम् (प्रत्यभिज्ञाहृदयम्)<br>(ख) समकालिकदर्शनम्<br>(विवेकानन्ददर्शनम्, अरविन्ददर्शनम्) | 100        | 80+20             | 60          | 05       |
|   |                | <b>Unit – I</b><br>प्रत्यभिज्ञाहृदयस्य १ सूत्रतः ७ सूत्रं यावत्  | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|   |                | <b>Unit – II</b><br>प्रत्यभिज्ञाहृदयस्य ८ सूत्रतः १७ सूत्रं यावत्  | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|   |                | <b>Unit – III</b><br>प्रत्यभिज्ञाहृदयस्य १८ सूत्रतः २० सूत्रं<br>यावत्   | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|   |                | <b>Unit – IV –</b><br>विवेकानन्ददर्शनम्<br>(क) धर्मः कः ?<br>(ख) आत्मा – ईश्वरश्च                                | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|   |                | <b>Unit – V –</b><br>अरविन्ददर्शनम्<br>(क) पुनर्जन्म- परलोकश्च<br>(ख) कर्म, आत्मा, अमृतञ्च                       | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
| <b>सहायकपुस्तकानि -</b>   |                |  |            |                   |             |          |
| १. प्रत्ययभिज्ञाहृदयम्, हिन्दी अनुवाद- व्याख्यासहितम्, ले. जयदेव सिंह, मोतिलाल बनारसीदास, वाराणसी-१९८३। |                |  |            |                   |             |          |
| २. The life divine, Book -2, Part – 2 by Sri Aurobindo, Published by Sri aurobindo Ashram, Pondicherry. |                |  |            |                   |             |          |

**SARVADARSHAN**  
**FOURTH SEMESTER**  
**विंशतिपत्रम्**

**Optional Elective 5.4.2**

| प्रश्नपत्रम्   | कोड           | विषयः  | पूर्णाङ्कः | अङ्क-विभाजनम् | कालांशः | क्रेडिट् |
|--|---------------|--|------------|---------------|---------|----------|
| 20.<br>Sarvadars<br>han  | C.C.<br>5.4.2 | चम्पूरामायणं गीतगोविन्दज्ञ   | 100        | 80+20         | 60      | 05       |
|  |               | <b>Unit – I –</b><br>चम्पूरामायणस्य आरण्यकाण्डस्य आरम्भतः<br>ऊनविंशतितमश्लोकं यावत्।           | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|  |               | <b>Unit – II –</b><br>चम्पूरामायणस्य आरण्यकाण्डस्य<br>ऊनविंशतितमश्लोकपरतः काण्डान्तं<br>यावत्। | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|  |               | <b>Unit – III –</b><br>गीतगोविन्दस्य प्रथमसर्गः  | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|  |               | <b>Unit – IV –</b><br>गीतगोविन्दस्य द्वितीयसर्गः   | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
|  |               | <b>Unit – V –</b><br>गीतगोविन्दस्य तृतीयसर्गः  | 16         | 10+3+3        | 12      | 01       |
| <b>सहायकग्रन्थाः</b>   |               |  |            |               |         |          |
| १. चम्पूरामायणम् – भोजराजविरचितम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।         |               |  |            |               |         |          |
| २. चम्पूरामायण का साहित्यिक परिशीलन – लेखक करुणाश्रीवास्तव।                  |               |  |            |               |         |          |
| ३. गीतगोविन्दम् (सटीकम्) – जयदेवविरचितम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी। |               |  |            |               |         |          |

\*\*\*\*\*

**ADVAITA VEDANTA**  
**FOURTH SEMESTER**  
**Core Foundation**

**C.F. 5.4.4.**

**षोडशपत्रम्**

| प्रश्नपत्रम्   | कोड           | विषयः  | पूर्णाङ्कः | अङ्क-<br>विभाजनम् | कालां<br>शः | क्रेडिट् |
|--|---------------|--|------------|-------------------|-------------|----------|
| 16. A.<br>Vedanta  | C.F.<br>5.4.4 | धर्मशास्त्रं शाङ्करवेदान्तश्च  | 100        | 80+20             | 60          | 05       |
|  |               | <b>Unit – I –</b><br>(क) धर्मस्तोतांसि<br>(ख) आधुनिकयुगे धर्मशास्त्रस्योपयोगिता      | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|  |               | <b>Unit – II –</b><br>(क) आचारविमर्शः<br>(ख) व्यवहारविमर्शः                          | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|  |               | <b>Unit – III –</b><br>(क) प्रायश्चित्तविमर्शः<br>(ख) श्राद्धविमर्शः                 | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|  |               | <b>Unit – IV –</b><br>शाङ्करदर्शनम् ( मूलतः ब्रह्मणः<br>सिद्ध्यर्थमागमप्रणीतं यावत्) | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|  |               | <b>Unit – V –</b><br>शाङ्करदर्शनम् ( अध्यासनिरूपणात्<br>अध्यायसमाप्तिं यावत्)        | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
| <b>सहायकग्रन्थाः-</b>  |               |  |            |                   |             |          |
| १. धर्मशास्त्रस्येतिहासः (प्रथमभागः), लेखकः प्रो. जयकृष्णमिश्रः, चौखम्बा संस्कृत सीरीज अफिस,<br>वाराणसी  |               |  |            |                   |             |          |
| २. History of Dharmashastra ( Ancient and Medieval Religious and civil Law), by<br>Dr.P.V.Kane, Vol. III, B.O.R.I, Poona                                       |               |  |            |                   |             |          |
| ३. The Dharmashastra : An Introductory Analysis , by Brajakishore Swain, Akshaya<br>Prakashan, Delhi -110052   |               |  |            |                   |             |          |
| ४. माधवाचार्यप्रणीतः सर्वदर्शनसंग्रह , प्रकाशकः -चौखम्बा विद्याभवनम्, वाराणसी  |               |  |            |                   |             |          |
| ५. मनुस्मृति वा मनुसंहिता(ओडिआ अनुबाद गवेषणाम् क टिप्पणी ३ अनुक्रमणिका घटक<br>ब्रजकिशोर द्वारा, एवं ग्रन्थ निकेतन, आनन्दबज्जार, श्री १ जगन्नाथ मन्दिर, पूरा ।। |               |  |            |                   |             |          |
| ६. संस्काराणां पर्यालोचनम् - लेखकः प्रो. जयकृष्णमिश्रः, पुरी, ओडिशा  |               |  |            |                   |             |          |
| ७. मनुस्मृतिः, (श्रीकुल्लूकभट्टप्रणीतमन्वर्थमुक्तावलीटीकासहिता) , चौखम्बा संस्कृत संस्थानम्,<br>वाराणसी - २२१००१   |               |  |            |                   |             |          |

\*\*\*\*\*

**ADVAITA VEDANTA**  
**FOURTH SEMESTER**  
**सप्तदशपत्रम्**

**Core Course 5.4.10**

| प्रश्नपत्रम्     | कोड            | विषयः  | पूर्णाङ्कः | अङ्क-विभाजनम् | कालांश | क्रेडिट् |
|------------------|----------------|--|------------|---------------|--------|----------|
| 17.<br>A.Vedanta | C.C.<br>5.4.10 | सिद्धान्तविन्दुः, (श्रीमधुसूदनसरस्वतीप्रणीतः)<br>संपूर्णः (श्रीशङ्कराचार्यकृतदशशलोकी-<br>व्याख्यानरूपः)  | 100        | 80+20         | 60     | 05       |
|                  |                | <b>Unit - I -</b><br>सिद्धान्तविन्दुः (निर्द्वारितविषयाः)<br>(क) मङ्गलशलोः<br>(ख) आत्मतत्वप्रतिपादनसाफल्यम्<br>(ग) तत्वमसीत्यत्र<br>तत्त्वंपदवाच्यार्थलक्षणविचारः<br>(घ) निर्विकल्पक वाक्यार्थबोधः,<br>अखण्डार्थता च<br>(ङ)आत्मविचारावश्यकत्वम्<br>(च) त्वं पदर्थे (जीवस्वरूपविषये)<br>वादिविप्रतिपत्तयः   | 16         | 10+3+3        | 12     | 01       |
|                  |                | <b>Unit - II -</b><br>प्रथमश्लोकार्थविचारः<br>(क) न भूमिन् तोयमिति प्रथमः श्लोकः<br>(ख) देहात्मवादादिमत-निराकरणम्<br>(ग) आत्मा नाभावप्रतियोगी<br>(घ) आत्मा कूटस्थः, साक्षी<br>(ङ) अन्तःकरणस्य प्रमाश्रयत्वम्<br>(च)नीरूपस्यापि आत्मनः प्रतिबिम्बने<br>प्रमाणोपन्यासः<br>(छ) अन्यथानुपपत्या अध्यासोपपादनम्,<br>अध्यासलक्षणं च<br>(ज) आभास-प्रतिबिम्ब-अवच्छेद-<br>दृष्टिसृष्टिवाद<br>(झ) लौकिकज्ञानप्रक्रिया | 16         | 10+3+3        | 12     | 01       |

|  |  |   |    |        |    |    |
|--|--|---|----|--------|----|----|
|  |  | (ज) ब्रह्मज्ञानेन आवरणनाशः<br>(असत्त्वापादकमध्यानापादकमिति<br>द्विविधमावरणम्)   |    |        |    |    |
|  |  | <b>Unit – III –</b><br>द्वितीयतृतीयचतुर्थश्लोकार्थविचारः<br>(क) न वर्णा न वर्णा इति<br>द्वितीयश्लोकार्थविचारः<br>(ख) प्रमात्रादिव्यवहारस्य ज्ञानोत्तरकालं<br>मिथ्यात्वप्रतीतिः<br>(ग) न माता पिता वेति तृतीयश्लोकार्थः<br>(घ) सुषुप्तौ पितृत्वाद्यभावे श्रुतिप्रमाणम्<br>(ङ) सुषुप्तौ जीवस्याद्वितीयब्रह्मात्मकत्वम्<br>(च) न सांख्यं न शैवमिति चतुर्थश्लोकार्थः<br>(छ) जगत्कारणविषये सांख्यादिमतानि<br>(ज) सांख्योक्त –<br>प्रधानकारणवादनिराकरणम्<br>(झ) मीमांसकमतखण्डनम्<br>(ञ) तार्किकादिमतखण्डनम् | 16 | 10+3+3 | 12 | 01 |
|  |  | <b>Unit – IV –</b><br>पञ्चमषष्ठसप्तमश्लोकार्थविचारः<br>(क) न चोर्ध्वमिति पञ्चमश्लोकार्थः<br>(ख) ब्रह्मणो विभूत्वोपपादनम्<br>(ग) शुक्लमिति षष्ठश्लोकार्थविचारः<br>(घ) परमात्मनः सर्वानर्थशून्यत्वम्<br>(ङ) न शास्ता न शास्त्रमिति<br>सप्तमश्लोकार्थविचारः<br>(च) ब्रह्मभावोपदेशफलम्  | 16 | 10+3+3 | 12 | 01 |
|  |  | <b>Unit – V –</b><br>अष्टमनवमनशमश्लोकार्थविचारः<br>(क) न जाग्रादिति अष्टमश्लोकार्थः<br>(ख) वेदान्तमते पदार्थनिरूपणम्<br>(ग) दृक्पदार्थः (आत्मा) तस्य त्रैविध्यं च<br>(घ) दृश्यपदार्थः (अव्याकृत- मूर्त्तिमूर्त्तिभेदेन<br>त्रिविधः)<br>(ङ) पञ्चीकरणम्<br>(च) जाग्रदाद्यवस्था<br>(छ) अपि व्यापकत्वादिति नवमश्लोकार्थः  | 16 | 10+3+3 | 12 | 01 |

|  |  |   |  |  |  |
|--|--|---|--|--|--|
|  |  | (ज) मोक्षस्य पुरुषार्थत्वम्<br>(झ) आत्मा स्वप्रकाशज्ञानरूपः<br>(ज) न चैकमिति दशमश्लोकार्थः<br>(ट) आत्मनः श्रुतिसिद्धत्वम् |  |  |  |
|--|--|---|--|--|--|

**सन्दर्भग्रन्थ :-**

सिद्धान्तविन्दु : (मधुसूदनसरस्वतीकृतः), सम्पादकः – महामहोपाध्याय वासुदेवशास्त्री, अङ्गद्वारा, Bhandarkar Oriental Research Institute, Poone – 4, 1962.

**ADVAITA VEDANTA**  
**FOURTH SEMESTER**  
**अष्टादशपत्रम्**

**Core Course 5.4.11.**

| प्रश्नपत्रम्     | कोड            | विषयः   | पूर्णाङ्कः | अङ्क-विभाजनम् | कालांश | क्रेडिट् |
|------------------|----------------|---|------------|---------------|--------|----------|
| 18.<br>A.Vedanta | C.C.<br>5.4.11 | (क) संक्षेपशारीरकम् –<br>(सर्वज्ञात्ममुनिप्रणीतम्) ६०<br>(ख) अपरोक्षानुभूतिः<br>(श्रीशङ्कराचार्यप्रणीता) ४०   | 100        | 80+20         | 60     | 05       |
|                  |                | <b>Unit – I –</b><br>संक्षेपशारीरकम्, प्रथमाध्यायः (आदितः २६ तमश्लोकं यावत्)<br>(क) मङ्गलानुष्ठानम् (१-५)<br>(ख) विचारफलनिरूपणम् (१६-१८)<br>(ग) ग्रन्थारम्भसमर्थनम् (१९)<br>(घ) बन्ध्याध्यासनिरूपणम् (२०-२२)<br>(ङ) आत्मनः सुखरूपत्वोपपादानम्<br>(२३-२६)<br>(प्रत्यक्षानुमानश्रुतिप्रमाणप्रदर्शनम्) | 16         | 10+3+3        | 12     | 01       |
|                  |                | <b>Unit – II –</b><br>संक्षेपशारीरकम्, चतुर्थाध्यायः<br>(आदितः ६९ तमश्लोकं यावत्)<br>(क) बोधात् फलनिष्पत्तिप्रकारः (१-८)<br>(ख) समुच्चयवाद निरासः (९-११)<br>(ग) अविद्यानिवृत्तिस्वरूपनिरूपणम्<br>(१२-२८)<br>(घ) मोक्षस्य कूटस्थनित्यत्वम् (२९-३९)   | 16         | 10+3+3        | 12     | 01       |
|                  |                | <b>Unit – III –</b><br>शंक्षेपशारीरकम्, चतुर्थाध्यायः<br>(४० तमश्लोकतः ६३ तमश्लोकं यावत्)<br>(क) जीवन्मुक्तिसमर्थनम् (४०-५०)<br>(ख) शिष्यस्य कृतकृत्यताप्रकाशः<br>(५-५९)<br>(ग) ग्रन्थनिर्माणप्रयोजनम् (६०)<br>(घ) ईश्वरार्पणम् (उपसंहारः) (६१-६३)  | 16         | 10+3+3        | 12     | 01       |

|  |   |    |        |    |    |
|--|---|----|--------|----|----|
|  | <p><b>Unit – IV –</b><br/> <b>अपरोक्षानुभूतिः</b><br/>         (आदितः ६४ तमश्लोकं यावत्) विषयाः<br/>         (क) मङ्गलाचरणम् (१)<br/>         (ख) ग्रन्थस्य प्रयोजनम् (२)<br/>         (ग) वैराग्यादिसाधनम् (३-९)<br/>         (घ) विचारप्रकारः (१०-१६)<br/>         (ङ) आत्मानात्मविवेकः (१७-२३)<br/>         (च) ज्ञानस्वरूपं तदुपदेशाश्र (२४-४०)<br/>         (छ) प्रपञ्चमिथ्यात्वम् (द्वैतमिथ्यात्वम्)<br/>         (४१-६४)</p> | 16 | 10+3+3 | 12 | 01 |
|  | <p><b>Unit – V –</b><br/> <b>अपरोक्षानुभूतिः</b><br/>         (६५ तमश्लोकतः १४४ तमश्लोकं यावत्)<br/>         (क) ब्रह्मणः सर्वात्मकत्वम् (६५-६९)<br/>         (ख) देहात्मतानिषेधः (७०-८९)<br/>         (ग) प्रारब्धनिराकरणम् (९०-९९)<br/>         (घ) निदिध्यासनस्य पञ्चशाङ्खानि (१००-१२६)<br/>         (ङ) समाधौ विघ्नाः (१२७-१२९)<br/>         (च) ब्राह्मी वृत्तिः (१३०-१३४)<br/>         (छ) वृत्तिज्ञानसाधनम् (१३४-१४४)</p>    | 16 | 10+3+3 | 12 | 01 |
| <b>सन्दर्भग्रन्थाः</b>   |   |    |        |    |    |
| १. शंक्षेपशारीरकम् (सर्वज्ञात्ममुनिप्रणीतम्) सम्पादकः - योगीन्द्रानन्दसरस्वती, वाराणसी । |   |    |        |    |    |
| २. अपरोक्षानुभूतिः (श्रीशङ्कराचार्यप्रणीता), गीताप्रेस, गोरखपुर ।                        |   |    |        |    |    |

**ADVAITA VEDANTA**  
**FOURTH SEMESTER**  
**उनविंशपत्रम्**

**Core Course 5.4.12.**

| प्रश्नपत्रम्     | कोड्           | विषयः   | पूर्णाङ्कः | अङ्क-<br>विभाजनम् | कालां<br>शः | क्रेडिट् |
|------------------|----------------|---|------------|-------------------|-------------|----------|
| 19.<br>A.Vedanta | C.C.<br>5.4.12 | छान्दोग्योपनिषद् शाङ्करभाष्यसहिता   | 100        | 80+20             | 60          | 05       |
|                  |                | <b>Unit – I –</b><br>षष्ठाध्याये प्रथमखण्डादारभ्य चतुर्थखण्डं<br>यावत्<br>(क) अध्यायसम्बन्धप्रदर्शनम्<br>(ख) आरुणे: श्वेतकेतुं प्रति उपदेशः<br>(ग) ब्रह्मादेशः<br>(घ) उत्पत्तेः प्राक् सदरूपस्य स्थितिः,<br>एकमेवाद्वितीयमिति श्रुत्यर्थविचारः<br>(ङ) सृष्टिक्रमः (नामरूपव्याकरणम्,<br>त्रिवृत्करणम्)<br>(च) एकविज्ञानेन सर्वविज्ञानम् (सदृष्टान्तम्) | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                  |                | <b>Unit – II –</b><br>षष्ठाध्याये पञ्चमखण्डादारभ्य अष्टमखण्डं<br>यावत्<br>(क) अन्नादीनां त्रिविधः परिणामः<br>(ख) मनः प्राणः, वाक्<br>(ग) षोडशकलस्य पुरुषस्य उपदेशः<br>(घ) सुषुप्तिकाले जीवस्य स्थितिः<br>(ङ) प्राणबन्धानं हि मनः<br>(च) सर्वाः प्रजाः सदायतनाः (परदेवता)<br>(छ) तत्त्वमस्मिमहावाक्योपदेशः   | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                  |                | <b>Unit – III –</b><br>षष्ठाध्याये नवमखण्डादारभ्य षोडशखण्डं<br>यावत्<br>(क) सुषुप्तौ सत्प्राप्तिज्ञानाभावे<br>मधुमाक्षिकादृष्टान्तः<br>(ख) नदीदृष्टान्तद्वारा सदुपदेशः<br>(ग) वृक्षदृष्टान्तद्वारा सदुपदेशः   | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |

|  |   |    |        |    |    |
|--|---|----|--------|----|----|
|  | (घ) न्यग्रोधफलदृष्टान्तद्वारा सदुपदेशः<br>(ङ) लवणदृष्टान्तद्वारा सदुपदेशः<br>(च) पुरुषदृष्टान्तद्वारा सदुपदेशः<br>(छ) तप्तरशुदृष्टान्तद्वारा सदृपदेशः<br>(ज) षष्ठाध्यायवाक्यप्रमाणजन्यफल-<br>प्रदर्शनम्   |    |        |    |    |
|  | <b>Unit – IV –</b><br>सप्तमाध्याये प्रथमखण्डादारभ्य पञ्चदशखण्डं<br>यावत्<br>(क) नारदं प्रति सनत्कुमारस्योपदेशः<br>(ख) वक्ष्यमाणग्रन्थारभ्यप्रयोजनम्<br>(आख्यायिकाप्रयोजनम्)<br>(ग) नामापेक्षया वाचः महत्वम्<br>(घ) वागपेक्षया मनसः श्रेष्ठत्वम्<br>(ङ) सङ्कल्पः<br>(च) चित्तम्<br>(छ) ध्यानम्<br>(ज) विज्ञानम्<br>(झ) बलम्<br>(अ) अत्रम्<br>(ट) जलम्<br>(ठ) तेजः<br>(ड) आकाशम्<br>(ढ) स्मरणम्<br>(ण) आशा<br>(त) प्राणः<br>(थ) अतिवादी | 16 | 10+3+3 | 12 | 01 |
|  | <b>Unit – V –</b><br>सप्तमाध्याये षोडशखण्डादारभ्य<br>षड्विंशखण्डं यावत्<br>(क) सत्यमेव ज्ञातुं योग्यम्<br>(ख) विज्ञानम्<br>(ग) विकारस्य परमार्थसत्यनिरासः<br>(घ) मतिः<br>(ङ) श्रद्धा<br>(च) निष्ठा  | 16 | 10+3+3 | 12 | 01 |

|  |  |  |  |  |  |
|--|--|--|--|--|--|
|  |  | (छ) कृतिः<br>(ज) सुखम् (भूमा)<br>(झ) भूग्नः स्वरूपं, तस्य सर्वव्यापकत्वम्<br>(ञ) तद्विज्ञानफलं च |  |  |  |
|--|--|--|--|--|--|

**सहायकग्रन्थाः**

१. छान्दोग्योपनिषद्, शाङ्करभाष्यसहिता, गीताप्रेस, गोरखपुर

**ADVAITA VEDANTA**  
**FOURTH SEMESTER**  
**विंशतिपत्रम्**

**Optional Elective 5.4.2**

| प्रश्नपत्रम्     | कोड           | विषयः  | पूर्णाङ्कः | अङ्क-विभाजनम् | कालांश | क्रेडिट् |
|------------------|---------------|--|------------|---------------|--------|----------|
| 20.<br>A.Vedanta | C.C.<br>5.4.2 | याज्ञवल्क्यस्मृतेः प्रायश्चित्ताध्यायः<br>(मिताक्षरासहितः)                   | 100        | 80+20         | 60     | 05       |
|                  |               | <b>Unit – I –</b><br>आपद्वर्मप्रकरणात् यतिधर्मप्रकरणं यावत्                  | 16         | 10+3+3        | 12     | 01       |
|                  |               | <b>Unit – II –</b><br>कर्मविपाकप्रकरणाद्<br>ब्रह्महत्याप्रायश्चित्तपर्यन्तम् | 16         | 10+3+3        | 12     | 01       |
|                  |               | <b>Unit – III –</b><br>सुरापानप्रायश्चित्तात् संवर्गप्रायश्चित्तं यावत्      | 16         | 10+3+3        | 12     | 01       |
|                  |               | <b>Unit – IV –</b><br>घोवधप्रायश्चित्तात् रहस्यप्रायश्चित्तं यावत्           | 16         | 10+3+3        | 12     | 01       |
|                  |               | <b>Unit – V –</b><br>यमनियमादारभ्य अध्यायसमाप्तिं यावत्                      | 16         | 10+3+3        | 12     | 01       |

**सहायकग्रन्थाः**

१. प्रायश्चित्तविवेकः — शूलपाणिकृतः ।
२. प्रायश्चित्तयुखः — नीलकण्ठभट्टकृतः ।
३. प्रायश्चित्तप्रकाशः — मित्रमित्रकृतः:
४. प्रायश्चित्तकल्पतदः — लक्ष्मीधरभट्टकृतः:

\*\*\*\*\*

**VEDA**  
**FOURTH SEMESTER**  
**Core Foundation**

**C.F. 5.4.4.**

**षोडशपत्रम्**

| प्रश्नपत्रम् | कोड         | विषयाङ्गानि   | पूर्णाङ्काः | अड्कविभाजनम् | कलांशाः | क्रेडिट् |
|--------------|-------------|---|-------------|--------------|---------|----------|
| 16.(VED)     | CF<br>5.4.4 | धर्मशास्त्रं शाङ्करदवेदान्तश्च<br>(Dharmaśāstram and<br>Śaṅkara's Philosophy) | 100         | 80 + 20      |         | 05       |
|              |             | Unit I –<br>(क) धर्मस्रोतांसि<br>(ख) आधुनिकयुगे<br>धर्मशास्त्रस्योपयोगिता     | 16          | 10+3+3       | 12      | 01       |
|              |             | Unit II- (क) आचारविमर्शः<br>(ख) व्यवहारविमर्शः                                | 16          | 10+3+3       | 12      | 01       |
|              |             | Unit III- (क) प्रायश्चितविमर्शः<br>(ख) श्राद्धविमर्शः                         | 16          | 10+3+3       | 12      | 01       |
|              |             | Unit IV-<br>शाङ्करदर्शनम् (मूलतः<br>ब्रह्मणः सिद्ध्यर्थमागमप्रणीतं<br>यावत्)  | 16          | 10+3+3       | 12      | 01       |
|              |             | Unit V-<br>शाङ्करदर्शनम्<br>(अध्यासनिरूपणात्<br>अध्यायसमाप्तिं यावत्)         | 16          | 10+3+3       | 12      | 01       |

**सहायकग्रन्थाः**

1. धर्मशास्त्रस्येतिहासः (प्रथमभागः), लेखकः – प्रो. जयकृष्णमिश्रःचौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, के. 37/99, वाराणसी - 221001 ।
2. History of Dharmashastra (Ancient and Medieval Religious and Civil Law), by Dr. Pandurang Vaman Kane, Vol. III, Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona.
3. संस्काराणां पर्यालोचनम्, लेखकः - डा. जयकृष्णमिश्रः, प्रकाशकः – डा. जयकृष्णमिश्रः, स्नातकोत्तरधर्मशास्त्रविभागः, श्रीजगन्नाथसंस्कृतविश्वविद्यालयः, पुरी, ओडिशा ।
4. मनुस्मृतिः (श्रीकुल्लकभट्टप्रणीत मन्वर्थमुक्तावली टीकासहिता मणिप्रभा हिन्दीव्याख्योपेता क्षेपकपरिशिष्टश्लोकैः श्लोकानुक्रमणिकया च सहिता), हिन्दीव्याख्याकारः – श्री पं हरगोविन्दशास्त्री, सम्पादकः – श्री पं गोपालशास्त्री नेने , प्रकाशकः – चौखम्बा संस्कृत संस्थान, पो. बा. नं. 1139, के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन (गोलघर समीप मैदागिन), वाराणसी 221001 ।

5. ମନୁସ୍ତୁତି ବା ମନୁସଂହିତା (ଓଡ଼ିଆ ଅନୁବାଦ ଗବେଷଣାମୂଳ ଟିପ୍ପଣୀ ଓ ଅନୁକ୍ରମଣିକା ସମ୍ବଲିତ), ଉଚ୍ଚର ବ୍ରଜକିଶୋର ସ୍ଥାଙ୍ଗ,  
ସଦ୍ ଗ୍ରନ୍ଥ ନିକେତନ, ଆନନ୍ଦ ବଜାର, ଶ୍ରୀଜଗନ୍ଧାଥ ମନ୍ଦିର, ପୁରୀ ।
6. The Dharmasastra : An Introductory Analysis, by Brajakishore Swain, Akshaya Prakashan,  
208, M. G. House, 2, Community Centre, Wazipur Industrial Area, Delhi- 110052.
7. ମାଧ୍ୟଵାଚାର୍ଯ୍ୟପ୍ରୀତି: ସର୍ଵଦର୍ଶନସଂଘର୍ଃ, ପ୍ରକାଶକ: – ଚୌଖମ୍ବାବିଦ୍ୟାଭବନମ୍, ବାରାଣସୀ ।

\*\*\*\*\*

**VEDA**  
**FOURTH SEMESTER**  
**सप्तदशपत्रम्**

**Core Course 5.4.10**

| प्रश्नपत्रम् | कोड़         | विषयाङ्गानि  | पूर्णाङ्कः | अड्कविभाजनम् | कलांशः | क्रेडिट् |
|--------------|--------------|--|------------|--------------|--------|----------|
| 17.(VED)     | CC<br>5.4.10 | ऋग्वेदभाष्यभूमिका प्रकृतिपाठश्च (Rgvedabhaṣyabhūmikā & Prakṛtipāṭhah)                          | 100        | 80 + 20      | 60     | 05       |
|              |              | Unit I- ऋग्वेदस्याभ्यर्हितत्वात् आरभ्य<br>विधिभागस्य प्रामाण्यमस्ति इति<br>यावत्               | 16         | 10+3+3       | 12     | 01       |
|              |              | Unit II- अर्थवादभागस्य प्रामाण्यं<br>नास्ति इति पूर्वपक्षात् आरभ्य<br>वेदस्यापौरुषेयत्वं यावत् | 16         | 10+3+3       | 12     | 01       |
|              |              | Unit III- वेदाध्ययनम् अवष्टफलाय<br>इत्यतः आरभ्य अनुवन्धचतुष्टयं<br>यावत्                       | 16         | 10+3+3       | 12     | 01       |
|              |              | Unit IV- वेदाङ्गानि  | 16         | 10+3+3       | 12     | 01       |
|              |              | Unit V- प्रकृतिपाठः  | 16         | 10+3+3       | 12     | 01       |

**सहायकग्रन्थाः**

1. चतुर्वेदभाष्यभूमिका, आचार्य-बलदेव -उपाध्यायसंपादिता, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी ।
2. श्रीसायणाचार्यविरचिता ऋग्वेदभाष्यभूमिका (हिन्दीव्याख्योपेता), व्याख्याकार – डा. वीरेन्द्र कुमार वर्मा, चौखम्भा ओरियन्टलिया, वाराणसी 221001 ।
3. *Sāyaṇa's Preface to the Rgvedabhaṣya*, English Translation by Peter Peterson, Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona.
4. ऋग्वेदभाष्यभूमिका सायणाचार्यकृता हिन्दी – व्याख्या-सहिता, व्याख्याकार – डा. हरिदत्त शास्त्री, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी ।
5. श्रीसायणाचार्यविरचिता हिन्दीव्याख्योपेता, व्याख्याकार – श्रीजगन्नाथपाठक, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी 221001 ।
6. विकृतिपाठपरिचय, श्रीरविशङ्करमिश्र, प्रकाशिका – श्रीमती चञ्चला मिश्र, वाराहीलेन्, South Gate, Puri 752001 ।
7. *Vedavikṛtilakṣaṇa-Samgrahah* (A Collection of twelve tracts on Vedavikṛtis and allied topics), complied and critically edited by Prof. K. V. Abhyankar and G. V. Devasthal, Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona.
8. स्वरवैदिकी-प्रकाशः, डा. बालगोविन्दज्ञा, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी ।

9. स्वरप्रक्रियाप्रकाश, डा. वामदेव मिश्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी ।
10. सिद्धान्तकौमुदी (वैदिकी प्रक्रिया), डा. उमाशङ्कर ‘ऋषि’, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 221001 ।
11. *The Vernacular Veda: Revelation, Recitation and Ritual*, Vasudha Narayanan, The University of South Carolina Press, USA.

**VEDA**  
**FOURTH SEMESTER**  
**अष्टादशपत्रम्**

**Core Course 5.4.12**

| प्रश्नपत्रम् | कोड़         | विषयाङ्गानि   | पूर्णाङ्काः | अङ्कविभाजनम् | कालांशाः | क्रेडिट् |
|--------------|--------------|---|-------------|--------------|----------|----------|
| 18. (VED)    | CC<br>5.4.12 | शुक्लयजुर्वेद-काण्वसंहिता<br>(उत्तरविंशतिः)<br><br>सायणभाष्यसहिता (21-<br>23,32,35,36,40 अ॒द्यायाः)<br><br>तथा विकृतिपाठः (Kāṇva-<br>Samhitā with the<br>commentary of Sāyaṇa,<br>Chapters 21-27 &<br>Vikṛtipāthah) | 100         | 80 + 20      | 60       | 05       |
|              |              | Unit I-<br>शुक्लयजुर्वेदकाण्वसंहितायाः<br>उत्तरविंशते: एकविंशोऽद्यायः<br>(21/1-111 मन्त्राः)<br>(सौत्रामणीयागः)   | 16          | 10 + 3 +3    | 12       | 01       |
|              |              | Unit II-<br>शुक्लयजुर्वेदकाण्वसंहितायाः<br>उत्तरविंशते:<br>द्वाविंशत्रयोविंशाद्यायौ<br>(22/1-78; 23/1-64 मन्त्राः)<br>(सौत्रामणीयागस्य<br>अवशिष्टांशः)  | 16          | 10 + 3 +3    | 12       | 01       |
|              |              | Unit III-<br>शुक्लयजुर्वेदकाण्वसंहितायाः<br>उत्तरविंशते: द्वात्रिंशोऽद्यायः<br>(32/1-84 मन्त्राः) (सर्वमेधः)  | 16          | 10 + 3 +3    | 12       | 01       |
|              |              | Unit IV-<br>शुक्लयजुर्वेदकाण्वसंहितायाः<br>उत्तरविंशते:<br>पञ्चत्रिंशत्वारिंशद्यायौ<br>(35/1-35; 36/1-24; 40/1-18)<br>(पुरुषमेधः शान्त्यद्यायः)   | 16          | 10 + 3 +3    | 12       | 01       |

|  |  |   |    |           |       |
|--|--|---|----|-----------|-------|
|  |  | ईशावास्योपनिषद् च)  |    |           |       |
|  |  | Unit V - विकृतिपाठः<br>(लक्षणोदाहरणैः सह<br>अष्टविकृतिपाठानां परिचयः) | 16 | 10 + 3 +3 | 12 01 |

### सहायकग्रन्थाः

1. शुक्लयजुर्वेदकाण्वसंहिता (उत्तरविंशतिः) सायणभाष्योपेता, सम्पादकः पं चिन्तामणिमिश्रशर्मा, उपसम्पादकः पं श्रीदिवाकरदाशशर्मा, सहसम्पादकः डा. गोपालचन्द्रमिश्रः, सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वाराणसी।
2. काण्व-संहिता, संपादक – पं श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, पारडी, बलसाड, गुजरात।
3. शुक्लयजुर्वेदकाण्वसंहिता (पूर्वविंशते: प्रथमो भागः), संपादकः – डा. दिवाकरमहापात्रः, प्रकाशिका – उत्कलवेद-प्रचारिणी परिषद्, शंकरानन्दमठ लेन्, तिआडि साहि, पुरी 752001।
4. शुक्लयजुर्वेदकाण्व-संहिता (उत्तरविंशतिः, प्रथमभागः तथा द्वितीयभागः) उत्कलानुवादसंहिता, संपादकः – डा. दिवाकरमहापात्रः, अग्रीयसंस्कृतगवेषणाकेन्द्रम्, श्रीजगन्नाथसंस्कृतविश्वविद्यालयः, श्रीविहारः, पुरी 752003।
5. अश्वमेधविवेकः, डा. दिवाकरमहापात्रः, नाग पब्लिशर्स, 11A, U.A. , Jawahar Nagar, Delhi 110007.
6. विकृतिपाठपरिचय, श्रीरविशङ्करमिश्र, प्रकाशिका – श्रीमती चञ्चला मिश्र, वाराहीलेन्, South Gate, Puri 752001।
7. जटापटलः श्रीहयग्रीवाचार्यविरचितः (श्रीदयाशङ्करव्यावहारिकविरचितया दीपिकाख्यटीकया सहितः), सम्पादकः डा. गयाचरणत्रिपाठी, गङ्गानाथझाकेन्द्रीयसंस्कृतविद्यापीठम्, चन्द्रशेखर आजाद पार्क, इलाहावाद 211002।
8. *Vedavikṛtilakṣaṇa-Samgrahah* (A Collection of twelve tracts on Vedavikṛtis and allied topics), complied and critically edited by Prof. K. V. Abhyankar and G. V. Devasthali, Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona.
9. स्वरवैदिकी-प्रकाशः, डा. बालगोविन्दझा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
10. स्वरप्रक्रियाप्रकाश, डा. वामदेव मिश्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
11. सिद्धान्तकौमुदी (वैदिकी प्रक्रिया), डा. उमाशङ्कर ‘ऋषि’, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 221001।
12. *The Vernacular Veda: Revelation, Recitation and Ritual*, Vasudha Narayanan, The University of South Carolina Press, USA.

**VEDA**  
**FOURTH SEMESTER**  
**उपविंशपत्रम्**

**Core Course 5.3.9**

| प्रश्नपत्रम् | कोड़         | विषयाङ्गानि  | पूर्णाङ्काः | अङ्कविभाजनम् | कालांशः | क्रेडिट् |
|--------------|--------------|--|-------------|--------------|---------|----------|
| 19. (VED)    | CC<br>5.4.12 | यज्ञतत्त्वप्रकाशः  | 100         | 80 + 20      | 60      | 05       |
|              |              | Unit I- अग्न्याधानतः आरभ्य<br>दर्शपूर्णमासयागान्तं यावत् | 16          | 10 + 3 + 3   | 12      | 01       |
|              |              | Unit II- पिण्डपितृयजतः आरभ्य<br>आग्रयणेष्टि यावत्        | 16          | 10 + 3 + 3   | 12      | 01       |
|              |              | Unit III- सोमयागनिरूपणम्                                 | 16          | 10 + 3 + 3   | 12      | 01       |
|              |              | Unit IV- चयनतः आरभ्य<br>राजसूययागान्तं यावत्             | 16          | 10 + 3 + 3   | 12      | 01       |
|              |              | Unit V- अश्वमेधयागतः आरभ्य<br>महाव्रतनिरूपणं यावत्       | 16          | 10 + 3 + 3   | 12      | 01       |

**सहायकग्रन्थाः**

1. यज्ञतत्त्वप्रकाशः महामहोपाद्यायश्रीचिन्नास्वामिशास्त्रिपादैः विरचितः, सम्पादकः पी. एन्. पट्टाभिरामशास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली 110007 ।
2. अश्वमेधविवेकः, डा. दिवाकरमहापात्रः, नाग पब्लिशर्स, 11A, U.A., Jawahar Nagar, Delhi 110007.
3. यज्ञतत्त्वविमर्शः, डा. मितालीदेव, सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालयः, वाराणसी ।
4. ब्राह्मण ग्रन्थों में दर्शपूर्णमासयाग (ब्राह्मणग्रन्थेषु दर्शपूर्णमासयागः), डा. उमेश प्रसाद दाश, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के अनुदान सहायता से प्रकाशित ।
5. यज्ञपात्रपरिचयः, मुख्यसम्पादकः – प्रो. हरेकृष्णशतपथी, सम्पादकः – आचार्यः श्रीपादसत्यनारायणमूर्तिः, राष्ट्रीयसंस्कृतविद्यापीठम्, तिरुपतिः 517507 ।
6. वैदिक यज्ञ संस्था और वेद विज्ञान, संपादक – प्रो. ओम् प्रकाश पाण्डेय, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, प्राधिकरण भवन, भरतपुरी, उज्जैन 456010 ।
7. *The Pravargya* (An Ancient Indian Iconic Ritual described and annotated), J. A. B. Buitenan, Deccan College, Postgraduate and Research Institute, Poona.

**VEDA**  
**FOURTH SEMESTER**  
**Optional Elective 5.4.2**

**विंशतिपत्रम्**

| प्रश्नपत्रम् | कोड         | विषयाङ्गानि   | पूर्णाङ्काः | अङ्कविभाजनम् | कालांशाः | क्रेडिट् |
|--------------|-------------|---|-------------|--------------|----------|----------|
| 20.<br>(VED) | OE<br>5.4.2 | याजवल्क्यस्मृतेः<br>प्रायशिच्छत्ताध्यायः<br>(मिताक्षरासहितः)<br>अशौचांशव्यतिरिक्तः (The<br>Prāyaścitādhyāyah of<br>Yājñavalkya-smṛti with<br>Mitākṣarā excluding the<br>portion of aśauca ) | 100         | 80 + 20      | 60       | 05       |
|              |             | Unit I-<br>आपद्धर्मप्रकरणात्<br>यतिधर्मप्रकरणं यावत्  | 16          | 10 + 3+ 3    | 12       | 01       |
|              |             | Unit II- कर्मविपाकप्रकरणात्<br>ब्रह्महत्याप्रायशिच्छत्पर्यन्तम्   | 16          | 10 + 3+ 3    | 12       | 01       |
|              |             | Unit III-<br>सुरापानप्रायशिच्छत्तात्<br>संसर्गप्रायशिच्छतं यावत्  | 16          | 10 + 3+ 3    | 12       | 01       |
|              |             | Unit IV-<br>गोवधप्रायशिच्छत्तात्<br>रहस्यप्रायशिच्छतं यावत्   | 16          | 10 + 3+ 3    | 12       | 01       |
|              |             | Unit V-<br>यमनियमाद्यारथ्य<br>प्रायशिच्छत्ताध्यायसमाप्तिं यावत्   | 16          | 10 + 3+ 3    | 12       | 01       |

**सहायकग्रन्थाः**

1. शूलपाणिकृतः प्रायशिच्छत्विवेकः, पं कुलमणिमिश्रसंपादितः ।
2. नीलकण्ठभट्टकृतः प्रायशिच्छत्तमयूखः ।
3. मित्रमिश्रकृतः प्रायशिच्छत्प्रकाशः ।
4. कृत्यकल्पतरुः (प्रायशिच्छत्काण्डः) लक्ष्मीधरकृतः ।
5. वासुदेवत्रिपाठिकृतः प्रायशिच्छत्विलोचनः ।

-----0-----

# Dharmashastra

## FOURTH SEMESTER

### Core Foundation

**CF 5.4.4.**

#### घोडशपत्रम्

| प्रश्नपत्रम्             | कोड           | विषयः  | पूर्णाङ्कः | अङ्क-<br>विभाजनम् | कालां<br>शः | क्रेडिट् |
|--------------------------|---------------|--|------------|-------------------|-------------|----------|
| 16.<br>Dharmash<br>astra | C.F.<br>5.4.4 | धर्मशास्त्रं शाङ्करवेदान्तश्च  | 100        | 80+20             | 60          | 05       |
|                          |               | <b>Unit – I –</b><br>(क) धर्मस्तोतांसि<br>(ख) आधुनिकयुगे धर्मशास्त्रस्योपयोगिता      | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                          |               | <b>Unit – II –</b><br>(क) आचारविमर्शः<br>(ख) व्यवहारविमर्शः                          | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                          |               | <b>Unit – III –</b><br>(क) प्रायश्चित्तविमर्शः<br>(ख) श्राद्धविमर्शः                 | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                          |               | <b>Unit – IV –</b><br>शाङ्करदर्शनम् ( मूलतः ब्रह्मणः<br>सिद्ध्यर्थमागमप्रणीतं यावत्) | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                          |               | <b>Unit – V –</b><br>शाङ्करदर्शनम् ( अध्यासनिरूपणात्<br>अध्यायसमाप्तिं यावत्)        | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |

#### सहायकग्रन्थाः-

- १ . धर्मशास्त्रस्येतिहासः (प्रथमभागः), लेखकः प्रो. जयकृष्णमिश्रः, चौखम्बा संस्कृत सीरीज अफिस, वाराणसी
२. History of Dharmashastra ( Ancient and Medieval Religious and civil Law), by Dr.P.V.Kane, Vol. III, B.O.R.I, Poona
- ३ . The Dharmashastra : An Introductory Analysis , by Brajakishore Swain, Akshaya Prakashan, Delhi -110052
४. माधवाचार्यप्रणीतः सर्वदर्शनसंग्रह , प्रकाशकः -चौखम्बा विद्याभवनम्, वाराणसी
५. मनूसृष्टि वा मनूषांहिता(ଓଡ଼ିଆ ଅନୁବାଦ ଗବେଷଣାମ୍ବକ ଟିପ୍ପଣୀ ଓ ଅନୁକ୍ରମଣିକା ସମ୍ପଦିତ) ଛକ୍ର ବ୍ରଜକିଶୋର ପ୍ରାଚୀ, ସଦ୍ ଗ୍ରନ୍ଥ ନିକେତନ, ଆନନ୍ଦବଜାର,ଶ୍ରୀ ଜଗନ୍ନାଥ ମନ୍ଦିର,ପୁରୀ।
୬. संस्काराणां पर्यालोचनम् - लेखकः प्रो. जयकृष्णमिश्रः, पुरी, ଓଡ଼ିଶା
୭. मनୁස୍ମୃତିः, (ଶ୍ରୀକୁଳ୍ଲୂକଭଦ୍ରପ୍ରଣୀତମନ୍ଵର୍ଥମୁକ୍ତାଵଲୀଟୀକାସହିତା), ଚौଖମ୍ବା ସଂସ୍କୃତ ସଂସ୍ଥାନମ्, ଵାରାଣସୀ - ୨୨୧୦୦୧

\*\*\*\*\*

**Dharmashastra**  
**FOURTH SEMESTER**  
**Core Foundation**

**CF 5.**

**सप्तदशपत्रम्**

| प्रश्नपत्रम्             | कोड     | विषयः   | पूर्णाङ्कः | अङ्क-<br>विभाजनम् | कालां<br>शः | क्रेडिट् |
|--------------------------|---------|---|------------|-------------------|-------------|----------|
| 17.<br>Dharmash<br>astra | C.F. 5. | श्राद्धदीपः, प्रो.जयकृष्णमिश्रसंपादितः<br>(दिव्यसिंहमहापात्रकृतः)                         | 100        | 80+20             | 60          | 05       |
|                          |         | <b>Unit – I –</b><br>ग्रन्थारम्भात् कन्याशौचपर्यन्तम्                                     | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                          |         | <b>Unit – II –</b><br>पित्रादैशौचे विशेषात् आरभ्य<br>वृद्धिश्राद्धविचारान्तम्             | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                          |         | <b>Unit – III –</b><br>अमावास्या श्राद्धविचारादारभ्य<br>कन्यागतापरपक्षश्राद्धनिर्णयान्तम् | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                          |         | <b>Unit – IV –</b><br>दीपदानविचारात्<br>श्राद्धीयपब्राह्मणविचारपर्यन्तम्                  | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                          |         | <b>Unit – V –</b><br>परिवेषणविचारात् ग्रन्थान्तं यावत्                                    | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |

**सहायकग्रन्थः-**

- १ . श्राद्धप्रकाशः – मित्रमिश्रकृतः
- २ . श्राद्धमयुखः – नीलकण्ठभट्टकृतः
- ३ . श्राद्धनिर्णयः – रघुनाथदाशकृतः

\*\*\*\*\*

# Dharmashastra

## FOURTH SEMESTER

अष्टादशपत्रम्

**C.C. 5.**

| प्रश्नपत्रम्   | कोड्       | विषयः   | पूर्णाङ्कः | अङ्क-<br>विभाजनम् | कालां<br>शः | क्रेडिट् |
|--|------------|---|------------|-------------------|-------------|----------|
| 18.<br>Dharmashastra   | C.C.<br>5. | आधुनिकहिन्दुविधिः<br>(प्रो.किशोरचन्द्रमहापात्रकृतः) | 100        | 80+20             | 60          | 05       |
|  |            | <b>Unit – I –</b><br>हिन्दुविवाहविधिः               | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|  |            | <b>Unit – II –</b><br>हिन्दुविवाहविधिः              | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|  |            | <b>Unit – III –</b><br>हिन्दूतराधिकारविधिः          | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|  |            | <b>Unit – IV –</b><br>हिन्दूतराधिकारविधिः           | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
|  |            | <b>Unit – V –</b><br>हिन्दुदत्तकपुत्रविधिः          | 16         | 10+3+3            | 12          | 01       |
| <b>सहायकग्रन्थाः</b>   |            |   |            |                   |             |          |
| १ . Principles of Hindu Law by D.F. Mulla.<br>२ . Modern Hindu Law- by Paras Dewan<br>३ . Hindu Law and Custom by J. Jolly |            |   |            |                   |             |          |

# Dharmashastra

## FOURTH SEMESTER

**C.C. 5.**

### ऊनविंशपत्रम्

| प्रश्नपत्रम्         | कोड        | विषयः  | पूर्णाङ्गः | अङ्क-<br>विभाजनम् | कालां<br>श | क्रेडिट् |
|----------------------|------------|--|------------|-------------------|------------|----------|
| 19.<br>Dharmashastra | C.C.<br>5. | याज्ञवल्क्यस्मृते: प्रायश्चित्ताध्यायः<br>(मिताक्षरासहितः)                   | 100        | 80+20             | 60         | 05       |
|                      |            | <b>Unit – I –</b><br>अपद्वर्मप्रकरणात् यतिधर्मप्रकरणं यावत्                  | 16         | 10+3+3            | 12         | 01       |
|                      |            | <b>Unit – II –</b><br>कर्मविपाकप्रकरणाद्<br>ब्रह्महत्याप्रायश्चित्तपर्यन्तम् | 16         | 10+3+3            | 12         | 01       |
|                      |            | <b>Unit – III –</b><br>सुरापानप्रायश्चित्तात् संवर्गप्रायश्चित्तं यावत्      | 16         | 10+3+3            | 12         | 01       |
|                      |            | <b>Unit – IV –</b><br>गोवधप्रायश्चित्तात् रहस्यप्रायश्चित्तं यावत्           | 16         | 10+3+3            | 12         | 01       |
|                      |            | <b>Unit – V –</b><br>यमनियमादारभ्य अध्यायसमाप्तिं यावत्                      | 16         | 10+3+3            | 12         | 01       |

#### सहायकग्रन्थाः

१. प्रायश्चित्तविवेकः – शूलपाणिकृतः ।
२. प्रायश्चित्तयुखः – नीलकण्ठभट्टकृतः ।
३. प्रायश्चित्तप्रकाशः – मित्रमित्रकृतः
४. प्रायश्चित्तकल्पतदः – लक्ष्मीधरभट्टकृतः

\*\*\*\*\*

**Dharmashastra**  
**FOURTH SEMESTER**  
**विंशतिपत्रम्**

**O.E.**

| प्रश्नपत्रम्             | कोड् | विषयः  | पूर्णाङ्काः | अङ्क-<br>विभाजनम् | कालां<br>शः | क्रेडिट् |
|--------------------------|------|--|-------------|-------------------|-------------|----------|
| 20.<br>Dharmash<br>astra | O.E. | छान्दोग्योपनिषद् शाङ्करभाष्यसहिता  | 100         | 80+20             | 60          | 05       |
|                          |      | <b>Unit – I –</b><br>षष्ठाध्याये प्रथमखण्डादारभ्य चतुर्थखण्डं<br>यावत्<br>(क) अध्यायसम्बन्धप्रदर्शनम्<br>(ख) आरुणे: श्वेतकेतुं प्रति उपदेशः<br>(ग) ब्रह्मादेशः<br>(घ) उत्पत्तेः प्राक् सदरूपस्य स्थितिः,<br>एकमेवाद्वितीयमिति श्रुत्यर्थविचारः<br>(ङ) सृष्टिक्रमः (नामरूपव्याकरणम्<br>त्रिवृत्करणम्)<br>(च) एकविज्ञानेन सर्वविज्ञानम् (सदृष्टान्तम्) | 16          | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                          |      | <b>Unit – II –</b><br>षष्ठाध्याये पञ्चमखण्डादारभ्य अष्टमखण्डं<br>यावत्<br>(क) अत्रादीनां त्रिविधिः परिणामः<br>(ख) मनः प्राणः, वाक्<br>(ग) षोडशकलस्य पुरुषस्य उपदेशः<br>(घ) सुषुप्तिकाले जीवस्य स्थितिः<br>(ङ) प्राणबन्धानं हि मनः<br>(च) सर्वाः प्रजाः सदायतनाः (परदेवता)<br>(छ) तत्त्वमसिमहावाक्योपदेशः   | 16          | 10+3+3            | 12          | 01       |
|                          |      | <b>Unit – III –</b><br>षष्ठाध्याये नवमखण्डादारभ्य शेषशखण्डं<br>यावत्<br>(क) सुषुप्तौ सत्प्राप्तिज्ञानाभावे<br>मधुमाक्षिकादृष्टान्तः<br>(ख) नदीदृष्टान्तद्वारा सदुपदेशः   | 16          | 10+3+3            | 12          | 01       |

|  |   |    |        |    |    |
|--|---|----|--------|----|----|
|  | (ग) वृक्षदृष्टान्तद्वारा सदुपदेशः<br>(घ) न्यग्रोधफलदृष्टान्तद्वारा सदुपदेशः<br>(ङ) लवणदृष्टान्तद्वारा सदुपदेशः<br>(च) पुरुषदृष्टान्तद्वारा सदुपदेशः<br>(छ) तप्तरशुदृष्टान्तद्वारा सदृपदेशः<br>(ज) षष्ठाध्यायवाक्यप्रमाणजन्यफल-<br>प्रदर्शनम्  |    |        |    |    |
|  | <b>Unit – IV –</b><br>सप्तमाध्याये प्रथमखण्डादारभ्य पञ्चदशखण्डं<br>यावत्<br>(क) नारदं प्रति सनत्कुमारस्योपदेशः<br>(ख) वक्ष्यमाणग्रन्थारम्भप्रयोजनम्<br>(आख्यायिकाप्रयोजनम्)<br>(ग) नामापेक्षया वाचः महत्वम्<br>(घ) वागपेक्षया मनसः श्रेष्ठत्वम्<br>(ङ) सङ्कल्पः<br>(च) चित्तम्<br>(छ) ध्यानम्<br>(ज) विज्ञानम्<br>(झ) बलम्<br>(अ) अत्रम्<br>(ट) जलम्<br>(ठ) तेजः<br>(ड) आकाशम्<br>(ढ) स्मरणम्<br>(ण) आशा<br>(त) प्राणः<br>(थ) अतिवादी | 16 | 10+3+3 | 12 | 01 |
|  | <b>Unit – V –</b><br>सप्तमाध्याये षोडशखण्डादारभ्य<br>षड्विंशखण्डं यावत्<br>(क) सत्यमेव ज्ञातुं योग्यम्<br>(ख) विज्ञानम्<br>(ग) विकारस्य परमार्थसत्यनिरासः<br>(घ) मतिः<br>(ङ) श्रद्धा  | 16 | 10+3+3 | 12 | 01 |

|  |  |  |  |  |
|--|--|--|--|--|
|  | (च) निष्ठा<br>(छ) कृतिः<br>(ज) सुखम् (भूमा)<br>(झ) भूग्नः स्वरूपं, तस्य सर्वव्यापकत्वम्<br>(अ) तद्विज्ञानफलं च |  |  |  |
|--|--|--|--|--|

सहायकग्रन्थाः

१. छान्दोग्योपनिषद्, शाङ्करभाष्यसहिता, गीताप्रेस, गोरखपुर

## **Instructions to the Paper Setters**

1. Each Paper shall carry 80 Marks in total and there shall be 05 units in each paper.
2. Each Unit shall be of 16 Marks.
3. In each unit there will be 01 long type of question (within 150 words) carrying 10 marks, one short answer type question carrying 03 marks and 03 multiple types of questions of 01 mark each.

## **Instructions to the Paper Setters**

1. Each Paper shall carry 80 Marks in total and there shall be 05 units in each paper.
2. Each Unit shall be of 16 Marks.
3. In each unit there will be 01 long type of question (within 150 words) carrying 10 marks, one short answer type question carrying 03 marks and 03 multiple types of questions of 01 mark each.

## **Instructions to the Paper Setters**

1. Each Paper shall carry 80 Marks in total and there shall be 05 units in each paper.
2. Each Unit shall be of 16 Marks.
3. In each unit there will be 01 long type of question (within 150 words) carrying 10 marks, one short answer type question carrying 03 marks and 03 multiple types of questions of 01 mark each.

## **Instructions to the Paper Setters**

1. Each Paper shall carry 80 Marks in total and there shall be 05 units in each paper.
2. Each Unit shall be of 16 Marks.
3. In each unit there will be 01 long type of question (within 150 words) carrying 10 marks, one short answer type question carrying 03 marks and 03 multiple types of questions of 01 mark each.